मासिक –

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	सोमवार 10 जनवरी 1983	संख्या 9

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक 17-7-81

फ़कीर अन्तिम गुरु पूर्णिमा वचन

तुम आये, मुझे मत्था टेका, पैसे दिये, कपड़े दिये, ठीक है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओए फ़कीर चन्द! यह मकड़ी का जाला तुमने क्यों बनाया? सुनो दोस्तो! मैं बचपन से उस परमात्मा को मिलने के लिए निकला था। हिन्दु था, अपने सनातन के असूल के अनुसार ईश्वर को, परमेश्वर को, ब्रह्म को, देवी-देवताओं को मानता था। चौबीस घण्टे रोने के बाद, क्योंकि मुझे ख़याल मिला हुआ था कि वह अवतार लेता है, रामायण में लिखा हुआ था :—

ता यह जज़्बा पैदा हुआ कि उस राम को अवतार के रूप में, इन्सानी शक्ल में देखूं, जैसा कि मैं पहले कहता रहता हूँ। एक दृश्य था, मुझे दाता के चरणों में ले गया। उन्होंने यह सन्तमत मुझको दिया। इस सन्तमत की वाणियां जब मैंने पढ़ीं तो मेरे दिल को चोट लगी। वे वाणियाँ क्या हैं, एक शब्द सुनो :—

इक पुरुष अजायब पाया, कोई मर्म न उसका गाया।
विन सन्त हाथ नहि आया, ऋषि मुनि सब धोखा खाया।

क्या व्यास वसिष्ठ भुलाया, क्या शेष महेश भ्रमाया।
पारासर जोगी नारद, शृंगी ऋषि गोता खाया।

हम कहें कौन समझाई, परतीत न कोई लाया।
सन्तन यह भाख सुनाया, कोई गुरुमुख बूझ बुझाया।

घट घट में काल समाया, श्रुति सिमृत जाल विछाया।
खट शास्तर बुद्धि चलाया, अंध मिल धूल उड़ाया।

कुछ हाथ न उनके आया, विन सत्तगुरु भटका खाया।
सन्तन वह देश जनाया, तब तुच्छ जीव भी पाया।

नीचों को घाट लगाया, ऊँचों को काल बहाया।
राधास्वामी पता बताया, खोजी की कमर बंधाया।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अब तुम देखो ! कि सन्तमत कहाँ पहुँचाता है। इस पुरुष अजायब की तलाश में मैंने अपना जीवन खो दिया। इस वाणी में स्वामी जी ने सब महापुरुषों और सब मज़हबों का खण्डन कर दिया। वह कहते हैं मुसलमान नहीं पहुँचे, ईसामसीह नहीं पहुँचा, जैनी और बौद्ध नहीं पहुँचे, सनातन नहीं पहुँचा तथा राम और कृष्ण को भी काल का अवतार बताया है। उस समय मेरा यक़ीन अपने सत्तगुरु दाता दयाल से तो टूटा नहीं मगर इन वाणियों की मुझे समझ नहीं आती थी। उस वक्त मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा, जो कुछ मुझे मिलेगा मैं संसार को बता जाऊंगा। दूसरे मेरे दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। अब तुम देखो, यह सन्तमत कहाँ पहुँचाता है। इस अजायब पुरुष की तलाश में मैंने अपना जीवन खो दिया।

और देखो ! इस दुनियां के बनाने वाले को इन सन्तों ने ज़ालिम और निर्दयी कहा है। अब मेरे जैसा आदमी जो इस दुनिया के पैदा करने वाले

को पूजता था, मत्था टेकता था, उसके लिए यह वाणी सुननी कि जिसने यह दुनिया पैदा की है वह ज़ालिम है, कितना मुश्किल था। इस वाणी से तो मेरा विश्वास गया नहीं क्योंकि मेरा विश्वास था दाता दयाल पर, उन्होंने ही मुझको यह वाणी दी थी। आज मैं कहता हूँ कि इस दुनिया को पैदा करने वाला वास्तव में ज़ालिम है। हर एक अपनी बात सोचे। मेरी लड़की है वह आधी पागल है। पैंसठ साल की हो गई मेरे घर में रहती है। अब मैं सोचता हूँ इसका ज़िम्मेवार कौन है, क्या मैं नहीं हूँ? मेरी ही कमज़ोरी या मेरे ही ख़्यालात या मेरे ही विचारों का नतीजा मेरी लड़की पर गया कि नहीं गया! तो क्या फिर मैं ज़ालिम नहीं हूँ? हम लोग अपने स्वार्थ और अपने आनन्द के लिए बच्चे पैदा करते हैं, बच्चों के ख्याल से नहीं करते बल्कि आनन्द लेने के लिए करते हैं, बच्चे खुदरौ अर्थात् बिन बुलाये मेहमान आ जाते हैं। वे टी. बी. से मरते हैं, मुकद्दमे चलते है, बादशाह भी हो जाते हैं, दुःख भी उठाते हैं, तो क्या हम ज़ालिम नहीं हैं? दिमाग़ वाले आदमी सोचें कि मैं ग़लत कह रहा हूँ या

ठीक कह रहा हूँ ! जिस ताकत ने यह दुनिया बनाई है उसने अपनी खुशी से दुनिया रची है। आप देखो ! वृक्ष पैदा होते हैं, इनको कीड़े खाते हैं, क्या वृक्ष में जान नहीं है ? एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, तीसरा चौथे को खाता है। मैं रात को सोता हूं मक्खियाँ तंग करती हैं। मैं कहता हू भई ! डी.डी.टी, लेकर छिड़क दो यहां और वे मर जाती हैं। यह दुनिया है क्या !

तो राधास्वामीमत या सन्तमत केवल उन आदमियों के लिए है जिनको यह यकीन हो गया है कि इस दुनिया में सुख नहीं, यहां सुख और दुःख दोनों हैं और जो इससे बचना चाहते हैं उनके लिए है यह सन्तमत, आम दुनिया के लिए नहीं है। मैं इसीलिए दुनिया को नाम नहीं देता। मेरे पास जितने आदमी आते हैं इस दुनिया के दुःखों से बचने के लिए आते हैं। कल एक आदमी आया वह रोता था। रात को मेरे पास दो औरतें गईं, कहती थीं बारह-2 वर्ष हो गये बच्चे नहीं हुए। मैं हँसा, यह दुनिया है क्या ? मुसीबत की जगह है। तो जिन शख्सों को इस बात का एहसास होता है कि भई ! यह तो हम

जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे, हमें तकलीफ़ है उनके लिए यह सन्तमत है, दुनिया के लिए बिलकुल नहीं ! मगर हम गुरु जो राधास्वामीमत या कबीरपन्थ के थे जो असलीयत है उसको छोड़कर के हम तो दुनिया में फँस गये ! नाम लिया चौथे पद का तो काम किया हमने दुनिया का ।

तो मैं यह काम क्यों करता हूँ क्योंकि मेरे ज़िम्मे यह ड्यूटी थी कि तालीम बदल जाना, तो मैंने यह समझा कि भई ! इस दुनिया से पार जाने वाले तो दुनिया में हैं कोई नहीं । यह तो कोई-2 आदमी है जो यह चाहता है कि दोबारा न जन्मूं, इसलिए मैंने अपने आश्रम का नाम साधारण जनता के लिए 'इन्सान बनो' रखा । अब इन्साम कौन है ? :—

गुरु पशु त्रिया पशु वेद पशु नर पशु संसार ।
मानुष ताहि जानिए जा में विवेक विचार ।।

जिसमें सच्ची समझ और विवेक है, उसके साथ जो अपना जीवन गुज़ारता है वह इन्सान है । जिस आदमी में विवेक शक्ति है, समझ-बूझ का माद्दा है

और वह समझ-बूझ के सहारे दुनिय काम करता है वह इन्सान है, यह मेरी समझ में आया है।

चूँकि दाता दयाल ने कहा था फ़क़ीर चन्द ! तालीम को बदल जाना, मैं नहीं कहता कि जो कुछ मैंने कहा है यही फाइनल है, मैं कान को हाथ लगाता हूँ। मेरे ज़िम्मे तो एक ड्यूटी है। अब आप लोग आये, आपने पैसा दिया अगर आप के इस पैसे को मैं खा जाऊँ तो मैं तो कुष्ठी हो कर मरूंगा। मेरा क्या हक़ है आप लोगों से लेने का ? मगर अगर आप दें नहीं तो आपका गुज़ारा नहीं इसलिए राधास्वामीमत में या सन्तों के मार्ग में।—

शिष्य को ऐसा चाहिए कि गुरु को सब कुछ देय,
गुरु को ऐसा चाहिए कि शिष्य का कछु न लेय।

इस वास्ते मैं आप लोगों का न तो कपड़ा लेता हूँ न कोई चीज़ लेता हूँ। एक आदमी ज्ञानवान् है, यार- दोस्त है वह मेरी सेवा कर जाता है मुझे उसका कोई दुःख नहीं, मैं उनकी सेवा कर देता हूँ वे मेरी सेवा कर देते हैं।

तो आज गुरु पूर्णिमा है, सब से पहिले मैं उन सत्संगियों को इज़्ज़त करता हूँ जिनकी वजह से मुझे इस अजायब पुरुष का पता लगा, मैं खुद इस मन के चक्कर में फँसा हुआ था। कानपुर से आज एक अमरनाथ यहाँ आया हुआ है, कहता है तीन साल हुए उसके अन्दर एक रूप प्रकट हुआ, उसने कहा कि तेरा वक्त आ गया। इसको पता नहीं था कि यह शक्ल किसकी है। यह इसकी तलाश में रहा किसी ने कहा भई! पण्डित खुशदिल्ल के पास देहरादून चले जाओ वह बता देगा। वह उसके पास गया। उसने कहा, जो तेरे अन्तर प्रकट हुआ है उसकी शक्ल बना दो। इसने उसकी शक्ल बना दी। उसने कहा "इस शक्ल के दो आदमियों को मैं जानता हूँ एक पीरेमुर्शां (दिल्ली), एक फ़कीर चन्द है।" और यह तलाश करता हुआ मेरे पास आया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द! तू उसके अन्दर गया था? मैं नहीं गया। तुझ को पता था? नहीं। इस वास्ते मैंने इस आदमी को अच्छे कपड़े दिये और अब साढ़े चार सौ रुपया इसके चरणों में भेंट किया। क्यों

किया ? इन लोगों के कारण मुझे यह यक़ीन हो गया कि जो कुछ सन्तमत ने कहा है वह ठीक कहा है। कोई गुरु, कोई राम, कोई कृष्ण, कोई देवी बाहर से इन्सान के अन्दर नहीं आता। इसी एक भ्रम में आकर इन्सानी नसल हज़ारों मज़हबों, हज़ारों पन्थों व फ़िरकों में बँट गई। कई दफ़ा सोचता हूँ यह बात क्या है ? मैं इस बात को समझता हूँ। बात यह है कि हम और तुम, जो कुछ भी हम सोचते, बोलते हैं, ब्यान करते हैं यह सब इस ब्रह्माण्ड में रहता है। हर एक इन्सान के शरीर के अन्तर से जैसा वह होता है एक रेडियेशन बाहर फैलती रहती है। इसका सबूत वैज्ञानिक तो समझते हैं मगर साधारण जनता नहीं समझती। पुलिस वालों के पास कुत्ते होते हैं कि नहीं होते। जहाँ डाका पड़ता है, कोई चोरी होती है, पुलिस वाले उसकी कोई चीज़ कुत्ते को सुंघा देते हैं, जहाँ-2 से वह डाकू या चोर गया हुआ होता है, जो गन्ध उसके कपड़े में होती है वह क्योंकि वहाँ फैलती जाती है, कुत्ता उस गन्ध को सूंघता हुआ जा कर उसको पकड़ लेता है। तो इससे साबित

हुआ कि हम या तुम जो कुछ भी हैं, जो कुछ हमारे अन्दर से निकलता है वह बाहर इस ब्रह्माण्ड में रहता है। ऋषियों और महापुरुषों के अच्छे ख़्यालात भी रहते हैं, और बुरे ख़्यालात भी आसमान में रहते हैं, जब किसी चीज़ की ज़बर्दस्त ज़रूरत होती है, वह जब चाह करता, मांगता व अपने अन्दर प्रार्थना करता है तो उसके अन्दर *Vaccum* (शून्य स्थान, आकाश) हो जाता है अर्थात् उसका मन खाली हो जाता है। आप किसी चीज़ की ज़बर्दस्त चाह रख कर मांगो कि मुझे वह चीज़ मिल जाये, सच्चे दिल से प्रार्थना करो आप का मन खाली हो जायेगा या नहीं हो जायेगा ? तो क़ुदरत में कोई चीज़ खाली नहीं रहती इसलिए चाह करने वाले की जिस किस्म की वासना होती है उस किस्म की वासना के अबखरात जो संसार में होते हैं वह शक्ल बनाकर उसके अन्दर आते हैं, यह नहीं कि फ़कीर चन्द आता है या कोई आता है। तुम्हारे हमारे, सब के ख़्यालात जाते हैं इस वास्ते मैंने तालीम को बदला है कि ऐ इन्सान ! तू अगर अपने दिल के अन्दर गन्दे ख़्यालात रखेगा,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

दुश्मनी के विचार रखेगा, तो तू आप चाहे किसी का कुछ नुकसान न कर तेरे जो ख़यालात इस ब्रह्माण्ड में रहेंगे वे नुकसान पहुँचायेंगे। क्या कहा मैंने, मेरी बात को समझने की कोशिश करो यदि दिमाग़ रखते हो तो। अच्छे ख़यालात भी और बुरे ख़यालात भी संसार में वातावरण में रहते हैं, यह साईन्स है। तो जहाँ, जो आदमी जिस प्रकार की ख़्वाहिश करता है वो जिस प्रकार के ख़यालात इस ब्रह्माण्ड में होते हैं वो शक्ल बनाकर उसके सामने जाते हैं या किसी तरीक़े से उसकी कमी को पूरा कर देते हैं। तो ऐ इन्सान! तू बेशक किसी को मुक्का न मार, किसी को तंग न कर मगर अगर तेरे दिल में ये गन्दे ख़यालात हैं कि अमुक बुरा है, अमुक यह है, अमुक वह है ये तुम्हारे ख़यालात ब्रह्माण्ड में रहेंगे और दूसरे आदमी जो-जो सम्पर्क में आयेगे उन पर असर करेंगे। क्या कहा मैंने!

अब आप लोग सत्संग में आये हैं। मैं आप लोगों को सत्संग देना चाहता हूँ। देखो! मैं सत्संग कराता हूँ, मेरी रेडियेशन आपको जाती है, आप जो मेरे पास आये हैं, मेरे पांव को माथा टेकते हैं। मेरे

शरोर को हाथ लगाते हैं तो आपकी रेडियेशन भी मुझे खाती है; मेरे मन पर असर होता है और मैं उस असर को महसूस करता हूँ, तभी तो मैं कहता हूँ कि मैंने पिछले जन्म में बड़े खोटे कर्म किये हैं कि जो मुझे यह काम करना पड़ा। क्या कहा मैंने! मैं तो कहता हूँ, आप लोग जो आते हैं मैं तो आप लोगों को अपना दुश्मन समझता हूँ। अगर बीस-तीस वर्ष पहले मुझे यह पता होता तो मैं कभी यह काम न करता, दाता दयाल के हुक्म को भी अनसूनी कर जाता। यह तो साईन्स है, मुझे हैजा हुआ-2 है, प्लेग हुई-2 है; जो भी मेरे सम्पर्क में आयेगा, उसको लगेगी, लगेगी कि नही लगेगी मुझे बताओ! वह तो जिस्मानी चीज़ है, ये मन के ख़्यालात हैं और आत्मा के ख़्यालात हैं। इसलिए उससे बचने का अब मैं क्या इलाज करता हूँ कि मैं आप में से किसी से प्यार नहीं करता और अपनी ज़ाती गरज़ आप से नहीं रखता। यह ख़्याल नहीं आता कि अमुक आये तो मेरे मन्दिर में 10 रु. दे जाये या मेरी सेवा कर जाये, यह नहीं करता। आप के प्रेम का जवाब निष्काम प्रेम मैं देता हूँ। कुसंगत के असर से बड़-2

महात्मा गिर जाते हैं। कल कहीं से एक औरत आई हुई है, उसने कहा मेरा भाई था, कोई अवधूत था, नंगा रहता था और बेफिक्र तथा मस्त रहता था, वह उसका चेला बन गया और वह चेलों के चक्कर में आ गया। औरतें वहाँ जाने लगीं, वह अवधूत उनके जाल में फँस गया। उसका भाई जो था उसने हज़ारों रुपये देकर वहाँ मन्दिर बनवाया, यह किया और वह किया, अब वह उदास होके घर में वापिस आ गया। वह महात्मा क्यों गन्दा हुआ! क्योंकि उस महात्मा ने तुम गृहस्थियों के साथ प्रेम किया। इस वास्ते मैं बिलकुल स्पष्ट बात कहता हूँ, कभी-2 मैं पुरुषोत्तम दास से भी प्रेम किया करता था जब से यह ज्ञान हुआ, अब किसी से प्रेम नहीं करता। अगर मैं तुम्हारा ख्याल करूँ तुम से प्रेम करूँ तो तुम मुझको बताओ कि मैं कहाँ जाऊंगा ?

मुद्दत हो गई आप लोगों को सत्संग करते-2, गुरु से प्रेम करते हो और फिर दूसरों से प्रेम हो, क्या वो असर तुम्हारे में नहीं जायेगा ? यही कारण है कि हम लोगों की कोई उन्नति नहीं होती। इसवास्ते

यह नामदान किसके लिए है ? हम गुरुओं ने यह नामदान तुम्हारे कल्याण के लिए नहीं दिया, मैं यह हौसले से कहूंगा कि आजकल के हम गुरुओं ने दुनिया को जो नाम दिया वह उनको जहर दिया। क्यों ? उसको मिलना चाहिए नाम :—

विषयों से होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहि जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे।

और फिर हुक्म है कि ज़र, जन और ज़मीन को मौज के हवाले छोड़ कर आओ। मैं आप लोगों को संगत से किसी समय गिर जाता हूँ। मैं प्यार करता हूँ, यह मैं नहीं कहता मगर मैं अपनी जाती गरज़ नहीं रखता। मैं यह इच्छा नहीं रखता, मुझे यह ख्वाहिश नहीं रहती कि तुम आओ तो मन्दिर में पैसा दे जाओ या मेरा कोई काम कर जाओ। क्योंकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी कि तालीम को बदल जाना इसलिए मैं अपना कर्म भोगता हूँ।

तो मैंने कहा था कि मैं यह काम क्यों कर[illegible] हूँ ? केवल इस बात को जानने के लिए कि यह राधास्वामियों का या कबीरपन्थियों का खुदा

क्या है जो यह कहते हैं अब मेरी समझ में आ गया कि जो कुछ भी हमारे मन के अन्तर, हम जिसको खुदा मानके पूजते हैं वह तो तुम्हारे मन का बनाया हुआ है। एक आदमी उसको मन से निराकार मान लेता है, दूसरा उसको साकार मान लेता है, उसने अपने मन से ही उसको पूजा कि नहीं पूजा ? तो जितने हम मजहब वाले हैं जिस खुदा को हम पूजते हैं यह हमारा अपना बनाया हुआ खुदा है, असली खुदा यह नहीं है। अब मैं पूछता हूँ क्या असली खुदा है ? हाँ, असली खुदा है। क्या है वह ? जिससे मेरा मन निकला, जिस चीज़ से मेरा मन बना है वह है असली खुदा, क्या कहा मैंने ! वह क्या चीज़ है ? वह है प्रकाश, वह है नूर। अगर नूर (प्रकाश) हमारे जिस्म में न आये तो हमारे अन्दर मन, चित्त, बुद्धि अहंकार नहीं पैदा हो सकते। इसलिए जितने मज़हब वाले हैं कोई देवी को पूजता है, कोई राम को पूजता है, कोई बाबे फ़कीर, मुहम्मद या जैसिस क्राईस्ट को पूजता है। ये किसको पूजते हैं ? ये अपने ही मन को पूजते हैं। इस ख़्याल से मैं मानने के लिए मजबूर हूँ कि जो कुछ, स्वामी

जी ने या सन्तों ने खण्डन किया कि ये सब काल और माया में हैं बिलकुल ठीक है। फिर सन्त किसको पूजते हैं ? उसको पूजते हैं जिसमें से मन, चित्त, बुद्धि अहंकार बनता है; वह है प्रकाश, नूर और यही सनातन धर्म कहता है :—

'भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् तत् सवितुर्बरेण्यम् ।'

वह जो सत्यम् है, वह जो नूर या प्रकाश है वह असली खुदा व मालिक है। अगर कोई व्यक्ति सच्चे खुदा को मिलना चाहता है तो वह क्या करे ? अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को प्रकट करे, यह है सच्चाई जो मैंने समझी। चूँकि सनातन भी यही कहता है, मुसलमान भी नूर को मानते हैं इसलिए यह जितना झगड़ा है यह उन आदमियों का है जिनको न इस्लाम की असलीयत का पता है, न सनातन की असलीयत का पता है, सारी दुनिया तो मन के चक्कर में फँसी हुई है।

आज गुरु पूर्णिमा है, आप लोगों ने मेरी सेवा की। मै आपकी क्या सेवा करूं ? यही कि जो आदमी कानपुर से आया हुआ है, या आई. सी. शर्मा

हैं अगर यह सच्ची बात उनको नहीं बताता, उनको अपने जाल में फंसाता हूँ, उनसे माथा टिकवाता और पैसे लेता हूँ तो क्या मैं अपराधी नहीं हूँ ? ये जितने महात्मा गुज़रे हैं, मैं हौसले से कहता हूँ कि इन्होंने अपनी ज़िन्दगियों के साथ खेल खेला है। अज्ञान में रखकर के तुम लोगों को ज़रूर दिलासा व हौसला दे गये मगर अपनी जान को बर्बाद कर गये। कोई महात्मा, कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता अगर कोई चीज़ जाती है तो मैंने जो कुछ कहा कि रेडियेशन में तरंगें होती हैं वे मौजूद रहती हैं। आजकल की साईन्स ने जर्मन के सैनिट हाल में वर्षों पहले वज़ीरों ने जो लैक्चर दिये हुए थे उनको उन्होंने रिकार्ड किया। तो जो कुछ भी हम सोचते, विचारते व बोलते हैं यह सब इस ब्रह्माण्ड में रहता है। यहाँ किसी को जिस चीज़ की आवश्यकता होती है वह ख्यालात जो ब्रह्माण्ड में हैं वे उसके अन्दर जाते हैं यह मेरा तजुर्बा है। कई आदमी कहते हैं इंग्लैण्ड में रूहों को बुलाते हैं। वह रूह जो आयेगी वह जो आगे होने वाला है उसकी बाबत नहीं बता सकती। वह चूँकि यकसू हो जाते हैं, मरने

वाले के जो ख़्यालात हैं वे ब्रह्माण्ड में रहते हैं, वे ख़्यालात आकर के भोगते हैं मगर वे उसके भविष्य के हालात नहीं बता सकते, यह है सबूत। अफसोस! मुझे शब्द नहीं मिल रहे, मैं जो कुछ आपको कहना चाहता हूँ उसके लिए मैं कोशिश कर रहा हूँ कि मुझे अच्छा शब्द मिले, आप समझ गये मेरी बात को कि नहीं! मरा हुआ कोई नहीं रहता यहाँ, न राम, न दाता दयाल, न बाबा गुरुनानक, केवल उनके ख्यालात, विचार व भाव मौजूद हैं। जब कोई इन्सान अपने अन्दर कोशिश करता है तो वह जो ब्रह्माण्ड के अन्दर ख्यालात होते हैं वे उसके अन्दर आ जाते हैं। गन्दा आदमी होता है तो जो गन्दे ख्यालात फैलते हैं वे आ जाते हैं जिस तरह रेडियो पर देखो ना! हर जगह रेडियो तरंगें चल रही हैं, हमको तो नज़र नहीं आतीं मगर अभी रेडियो लगा दो जालन्धर सुन लो, दिल्ली सुन लो, ऐसे ही हमारे ख़्यालात और हमारे विचार इस ब्रह्माण्ड के अन्दर मौजूद रहते हैं। इन्सान जो बुरा सोचता है वह कहता है मैं किसी का बुरा नहीं करता और मेरी समझ में आया है कि ऐ इन्सान! तू जो हर वक्त गन्दे ख़्यालात

रखता है तू दुनिया के लिए जहर फैला रहा है, तेरे ख़्यालात ब्रह्माण्ड में रहेंगे और दूसरों के ऊपर आक्रमण करेंगे। क्या कहा मैंने! अफसोस !! मुझे लैक्चर देना नहीं आता मगर मैं अपने भाव को ब्यान करता हूँ, इसलिए वेद मार्ग है 'शिवसंकल्पमस्तु'। हम घर में बैठे हुए दूसरों की बुराई सोचते रहते हैं, आप सोचते हैं इसका कोई असर नहीं? वह जो तुम्हारी सोच व विचार है वे जो तुम्हारी तरंगें हैं तुम्हारे अन्दर से निकलती हैं वे ब्रह्माण्ड में रहती हैं उनका असर दूसरों पर पड़ता है। यह तो अब साईन्स ने साबित किया ना! हमारे ऋषि क्या करते थे? औरतें होती थीं वे सिवाय अपने पति के बिस्तर के और किसी दूसरे के बिस्तर पर नहीं सोती थीं! औरतों को मालूम होगा, क्यों? क्योंकि जो, जिस अवस्था में रहता है, जो जैसा है उसके प्रभाव उसके कपड़े में जाते हैं। तो जो आदमी उस कपड़े को इस्तेमाल करेगा उसके जज़बात उसके अन्दर जायेंगे, सोचो मेरी बात को! हमारे यहाँ पगड़ी बदल भाई बनते हैं अर्थात् वह पगड़ी अपनी उसको दे देता है और वह अपनी पगड़ी उसको दे

ता ताकि उसके ख़्यालात उसमें चले जायें और उसके ख़्यालात उसमें चले जायें, यह है साईन्स!

आप लोग सत्संग में आये हैं, मेरी बुढ़ापे की उमर पर रहम करो, बात को समझो और अपना जन्म बनाओ। अरे! पैसे देने से, आरतियाँ करने से या यह करने से अगर तुम यह चाहो कि तुम्हारा कल्याण हो जाय, यह नहीं होगा! नहीं होगा!! नहीं होगा!!! यह दुनिया का व्यवहार है, लेना-देना पड़ता है, न कोई लेता है, न कोई देता है, पिछले जन्म का जिसने किसी से लेना है उसने लेना है, जितना देना है उसने देना है तो मैं यह काम क्यों करता हूँ, मैं सोचता हूँ फ़कीर चन्द! तूने यह क्या मकड़ी का जाला बनाया है? मैंने मकड़ी का जाला नहीं बनाया, नहि! मैं इस संसार में फ़कीर के चोले में आया ही इस वास्ते हूँ कि सन्तमत या हक़ीक़त या असलीयत को बिलकुल खोल कर के बता जाऊँ ताकि इन्सानी नसल जो बचना चाहती है वह इस असूल को समझ कर बचे, नहीं बचना चाहते तो मैं क्या करूँ या कोई क्या करे। यह है मेरे काम करने का असली उद्देश्य व असली खेल।

जब मुझे इस बात का यक़ीन हो गया कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता तो अब मैं क्या करता हूँ? मन को छोड़ जाता हूँ। परन्तु इस वक्त मैं यह समझता हूँ, कि ये सत्संगी मेरे सब से बड़े दुश्मन हैं क्योंकि आपकी रेडियेशन मुझ पर असर करती है, $2 \times 2 = 4$ के। केवल एक सूरत मैंने इस से बचाव की देखी कि मैं अपनी निजी गरज के लिए आपसे प्रेम नहीं करता, आप से क्या; लड़के से प्रेम नहीं करता, बहू से प्रेम नहीं करता, बीबी तो मर गई अब उनसे भी प्रेम नहीं करता, पोते-पोतियों को भी मैं छोड़ गया इस भ्रम में आकर कि रेडियेशन का क़ानून काम करता है। मगर इस रेडियेशन से कोई बच नहीं सकता, इस वास्ते सन्त कहते हैं, ऐ इन्सान! यह दुनिया जिसमें तू रहता है यह ऐसी ही है। इससे अगर बचना चाहता है तो तू मन से ऊपर चला जा, बस! लाख इन्सान कोशिश करे इस रेडियेशन के असूल से तुम बच कर जाओगे कहां क्योंकि दुनिया में रहते हैं। तो सन्तों के मार्ग में जन्म-मरण से बचने का एक तरीका है जो मैं कहा करता हूँ, जो साईन्स ने साबित किया है कि

डाक्टरों ने मरने वाले को सूक्ष्म तराजू पर रखा। जब उसकी रूह निकली तो वजन 5 ग्राम से 25 ग्राम तक घट गया। उस रूह का भारीपन क्यों था? क्योंकि मरने वाले को किसी स्थूल पदार्थ से प्रेम था। इसलिए जो गुरु को आदमी समझता है उसका तो बाप भी जन्म-मरण से नहीं निकल सकता क्योंकि वह फ़कीर चन्द को शरीर समझता है, उसका प्रेम शरीर के साथ है। आजकल का यह गुरुइज्म पाखण्डइज्म है "नाम लें जाओ जी, गुरु अन्त समय में तुमको सत्तलोक में ले जायेगा।" अरे! अन्त समय जो देहधारी गुरु तुम्हारे सामने आयेगा वह तुम्हें सत्तलोक नहीं ले जा सकता, हाँ! अच्छी योनि मिलेगी, अच्छे ख्यालात और अच्छे विचार मिलेंगे। क्योंकि मैंने देखा कि इस वक्त गुरुमत में बहुत सा धोखा व फ़रेब है, मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी, मैंने सच्चाई की घोषणा कर दी।

तो मुझे यकीन हो गया कि वह अजायब पुरुष कहाँ रहता है? वह मन के परे रहता है। चूँकि यह तजुर्बा मुझे आप सत्संगियों से हुआ इस वास्ते गुरु पूर्णिमा के दिन, ऐ मुझे गुरु मानने वाले प्यारो!

मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े यदि में झूठ बोलूं, मैं आप लोगों के चरणों में अपना सिर निवा कर, आपको गुरु रूप समझ कर नमस्कार करता हूँ। क्यों? क्योंकि आप लोगों के कारण मुझे यह ज्ञान हुआ जिस चीज़ के लिए मैं सारी ज़िन्दगी तड़प-2 कर मर गया, हज़ारों रुपया मैंने आरती पर खर्च किया, हुक्म था गुरु की सेवा करो, मैं भी करता था। बारह वर्ष जो कमाया सब वहाँ भेजा मगर वह रहस्य हल नहीं होता था। दाता दयाल ने मुझे काम दिया था, कहा था फ़कीर चन्द! तुमको सच्चा सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा और अब आप लोगों के अनुभवों ने मेरी आंख खोल दी। मैं इस काम से सुखी नहीं हूँ, आपको बिलकुल सच्ची बात कहता हूँ मगर :—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन तस फल चाखा।

चूँकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा, दाता दयाल को मैंने अपने ही विश्वास से अपना मालिक माना, अब मेरे दिल पर उनके हुक्म की ज़िम्मेवारी आ गई। क्योंकि उन्होंने कहा था, फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना

इसलिए मैं मजबूर हूं।' अब आप लोग आते हैं, मैं जानता हूँ जहाँ मैं बोलता हूँ वहाँ आप नहीं जा सकते। यह वहाँ जाना भी अपने वश में नहीं है, जन्म-जन्मान्तरों के किस्मे होते हैं, कोई भाग्यशाली हो वहाँ जाता है। बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि बड़े भाग्य हों तो सत्संग मिलता है, बड़े भाग्य हों तो सत्संग की बात समझ में आती है, बड़ा भाग्य हो तो वह अमल करता है।

आप गृहस्थियों के लिए मैंने 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है, जो काम करो विवेक से करो :—

गुरु पशु त्रिया पशु वेद पशु नर पशु संसार।
मानुष ताहे जानिए जा में विवेक विचार।

सोच समझ के साथ करो। क्या कहना चाहता हूं? सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। आजकल हम लोग खुदरौ सन्तान पैदा करते हैं और फिर आप यह उम्मीद करें कि वह आप के बच्चे जो खुदरौ हुए हैं ये जन्नत में रहेंगे, आप की सेवा करेंगे, आपकी खिदमत करेंगे, कैसे हो सकता है! परसों एक आदमी मेरे पास रोता हुआ आया, लड़के

को बड़ा पाला, पढ़ाया, शादी कर दी वह घर में लड़ाई करता था, अब अलग हो गया। मैं पूछता हूँ उस आदमी को, क्या तुम ने बच्चे को बच्चे के लिए पैदा किया था? अपने स्वाद के लिए औरत के पास हम जाते हैं बच्चे पेट में आ जाते हैं, फिर उम्मीद करते हैं कि वे बच्चे हमारी ताबेदारी करेंगे या हमारे लिए यह करेंगे, यह व्यर्थ बात है। एक विवेक तो मैं यह देना चाहता हूँ। दूसरा विवेक यह है कि तुम्हारे ख़याल में बड़ी भारी ताक़त है। इसका सबूत मैं तुमको देता हूँ। मैं तुमको गीता नहीं पढ़ाता, रामायण नहीं पढ़ाता, अंजील नहीं पढ़ाता, असूल की बात बताता हूँ। रात को तुम सो जाते हो तुमको गुस्सा आता है, किसी को मुक्का मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है। रात को स्वप्न में डर जाते हो, तुम्हारी ज़बान बड़बडाती है, रात को स्वप्न में ख़्याली औरत बना लेते हो तुम्हारा वीर्य निकल जाता है। स्वप्न का ख़्याल तुम्हारे वश में नहीं है, जब स्वप्न का भी ख़्याल जो तुम्हारे वश में नहीं है, वह तुम्हारे शरीर पर असर करता है तो जागते हुए हमें किसी से नफ़रत है, किसी से द्वेष है,

किसी से झगड़ा है, किसी के विरुद्ध योजना बनाते रहते हैं किसी के विरुद्ध कुछ, किसी के विरुद्ध कुछ इसका असर तुम्हारे शरीर पर क्यों न होगा। यह Logical है, इसमें न किसी हिन्दु का सवाल है, न मुसलमान का सवाल है, न ईसाई का सवाल है, यह इन्सानियत का सवाल है। इस वास्ते इन्सान कौन है ? जो विवेक से रहता है।

विवेक, विचार जो मेंने समझा अपने कर्मभोग-वश कहता हूँ। ऐ दाता! पता नहीं मेरा दिमाग़ खराब हो गया है, आपने कहा था तालोम बदल जाना, जो कुछ मेरो समझ में आया मैं कहता रहता हूँ, अच्छा है तो, बुरा है तो, मुझे पता नहीं। मैंने आपको सबूत दे दिया, Logicaly बिलकुल असूल के अनुसार।

और विवेक यह है कि जब तुम्हारे ख़्याल में ताक़त है तो घरों में रहते हो, एक दूसरे का बुरा मत चाहो। यहाँ आजकल क्या है ? लड़का बाप के विरुद्ध है, औरत, पति के विरुद्ध है, भाई,भाई के विरुद्ध है, देश में क्या हो रहा है। एक पार्टी दूसरी

पार्टी के विरुद्ध है, फिर तुम यह आशा करते हो कि ऐसी हालत में तुम्हारा देश सुखी रहेगा? आप भूल जाओ :—

> इब्तदा-ए इश्क़ है रोता है क्या,
> आगे आगे देखना होता है क्या।

ये जो हमारे ख़्यालात हैं इनका नतीजा मैं नहीं कहता क्या हो, मगर इनका असर हमारे शरीर पर जरूर पड़ेगा, पड़ेगा, पड़ेगा, कोई ताकत रोक नहीं सकती। जो मर्जी चाहे पार्टी आ जाये वह हमको मुसीबत से नहीं बचा सकती क्योंकि यह प्रकृति का खेल है, इस वक्त नफ़रत का खेल है। राजनैतिक दल क्या गुण्डागर्दी नहीं करते, हम घरों में क्या कुछ नहीं करते, रोज झगड़े होते हैं और शीतयुद्ध (Cold war) रखते हैं, फिर, यह उम्मीद करो कि तुम सुखी रहोगे, यह ग़लत है। मेरे जिम्मे ड्यूटी था, मैंने कह दिया।

तीसरी बात, मैं नौजवान बच्चों को यह कहना चाहता हूँ जो मेरे पास आते हैं कि लड़के प्रौढ़ता (Maturity) से पहले अपने ब्रह्मचर्य को खो देते हैं।

कोई हाथरसी करता है, लड़कियाँ चपटी खेलती हैं, गन्दे ख़्यालात रखती हैं तो उनके शरीर के अन्दर दिमाग़ की ख़राबी होना, बीमारी होनी, यह होना, वह होना यह ज़रूरी बात है। इसलिए मैंने तालीम को बदला, अच्छी सन्तान पैदा करो, घर में शान्ति रखो, कम से कम जब तक तुम प्रौढ़ता (Maturity) को हासिल नहीं करते अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को क़ायम रखो, अच्छी औलाद पैदा करो।

चौथी बात यह है कि इन्सान का मन कमज़ोर है, इसकी क़ुव्वते-इरादो को बढ़ाने के लिए सुमिरन, ध्यान किया करो। मैं नहीं कहता तुम राधास्वामी-मत के हिसाब से सुमिरन करो, मैं नहीं कहता तुम सिक्खमत के हिसाब से करो, तुम मन को भ्रूमध्य में इकट्ठा करने की कोशिश किया करो, राम-राम के जाप से करो, अल्लाहू के जाप से करो, वाहेगुरु के जाप से करो, एक, दो, तीन, चार, पांच, दस के जाप से करो मतलब तो तुम्हारे मन की एकाग्रता की ज़रूरत है। जिसका मन एकाग्र होता है उसकी Will Power अच्छी हो जाती है, उसके काम हो

जाते हैं। एक बात मैं यह कहना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी तालीम बदल जाना, मैं किसी मज़हब का अनुयायी नहीं, न मैं हिन्दु हूँ, न मैं मुसलमान हूँ, न मैं राधास्वामिया हूँ, न मैं सिक्ख हू, न मैं ईसाई हूँ, मैं मनुष्य हूँ, आपकी तरह एक आदमी हूँ, जैसे आप हैं वैसे मैं हूँ, बन्दिशें (बन्धन) टूट गईं, दाता ने बड़ा रहम किया, सब ख़त्म हो गईं।

तो इन्सानियत के असूल मैंने आप को बता दिये। चूँकि मन बहुत चंचल है, ठहरता नहीं, इसको क़ाबू करना आसान नहीं! इसलिए इसका इलाज यह है कि सत्संग अच्छा रहे, एक। दूसरे, भ्रूमध्य पर सुमिरन किया करो मैं नहीं कहता तुम पाँचनाम का सुमिरन करो, राधास्वामी नाम का करो, आप की मर्ज़ी मुझ से अगर कोई पूछोगे तो मैं तो राधास्वामी नाम बताऊँगा क्योंकि मैं गुरु को प्रणाली तोड़ना नहीं चाहता मगर मैंने तो चेले कोई नहीं बनाये। प्रतिदिन प्रातः-साय ज़रूर पन्द्रह मिनट, बीस मिनट, आधा घण्टा ध्यान किया करो, आपकी ज़िन्दगी बदल जायेगी। दोसरे, हमारी हक़-हलाल

की कमाई होनी चाहिए। हम हेराफेरी करते हैं, चारसौबीस करते हैं, यह करते हैं, वह करते हैं तो जैसी हमारी कमाई है वैसा हम पर असर पड़ता है। तो ये चार-पाँच बातें हैं जो मैंने आपको कह दीं। ज़्यादा बोला नहीं जाता, पर सम्बन्धित मेरे टेपरिकार्ड भरे हुए हैं उनसे आपको ज़्यादा जानकारी हो सकती है।

आप लोग आये हैं। दाता! मैं पतित हूँ, आपकी शरण में गया था, पतित को आपने अंग लगाया! खेल खिलाया!! मेरे पास तो कुछ है नहीं। जो संस्कार आपने दिया मैं कर चला, अच्छा कर चला, बुरा कर चला मुझे पता नहीं। ज़िन्दगी तो अब समाप्ति पर है, ऐ मालिक! अपने चरण-कमलों में वासा दे दे, संसार भूल जाऊँ। आपका एहसान! आपने दाता के रूप में जो हुक्म दिया, बजा लाया, क्षमा चाहता हूँ एक घण्टा बोल दिया। सब को राधास्वामी!

सत्संग परम सन्त मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक 31-10-82

[गतांक से आगे]

विशेषता का ज्ञान है वह तार-तार करता है, वह परमाणुओं को भी अलग कर देता है। वह विज्ञान तो भौतिक ज्ञान है उससे हम भौतिक शक्ति पर काबू पा सकते हैं। परन्तु उसका नुक्सान भी है, जैसे कि परमाणु का ज्ञान है, और एटमबम्ब बनता है, वे बम्ब अगर चला दिये जायें तो बारह मिनट के अन्दर सारी पृथ्वी का सत्यानाश हो जाये। यह भी ज्ञान है परन्तु जो आदमी इस ज्ञान को जानता है वह भी ज्ञानी नहीं है। ज्ञानी तो वह है जो जानता है कि मैं कौन हूँ, अपना आपा क्या है। मैत्री ने अपने पति ऋषि याज्ञवल्क्य जी से कहा था कि मुझ

ज्ञान दो, वह ज्ञान जिसके जानने के बाद किसी चीज़ को जानने की जरूरत नहीं रहती, वह सच्चा ज्ञान होता है। तो याज्ञवल्क्य जी ने कहा, मैत्री ! उस ज्ञान का क्या ज्ञान दिया जाय जिससे सब कुछ जाना जाता है, मैं उसी ज्ञान की बात कर रहा हूँ। महाराज जी को वह ज्ञान था। यों तो महाराज़ जी कहते थे मैं कुछ नहीं जानता परन्तु बताइये कौन सा ज्ञान था जो उनके पास नहीं था। पुरुषोत्तम दास जी के दामाद घर से भाग कर चले गये थे, जब मालिक को पुकार की गई कि बताओ वह कहाँ हैं तो आँखें बन्द करके कहते हैं कि कलकत्ते में एक पीले मकान में बैठे हैं। मामूली बात है परन्तु वह ज्ञान जिसको जानकर के और किसी चीज़ के जानने की जरूरत नहीं रहती उस ज्ञान को न आईनस्टाईन जान सका, न हवाई जहाज बनाने वाला जान सकता है, न एटमबम्ब के बनाने वाला जान सकता है, वह परमतत्त्व का ज्ञान जिसके पास है वही परमतत्त्व का अवतार है, बाकी नहीं हैं। बताओ, और किसी सन्त ने ऐसा कहा है, "मैं उस अजायब पुरुष को जानता हूँ, मैं उससे बात करता हूँ" है किसी को हिम्मत कहने

की ? इसलिए उसको परमतत्त्व का अवतार कहा है। और जब यह ज्ञान होता है तो वह ज्ञानी अलगाव नहीं करता, वह एक करता है, यह निशानी है गुरु की। जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया वह कभी अलगाव करेगा नहीं, किसी की फूट नहीं डलवायेगा अगर फूट डलवाता है, लड़ाई करवाता है वह सन्त काहे का। मेरे प्यारे सिक्ख भाइयो ! क्या यह सच्चा सौदा है अलगाव करने का, फोड़ने, नफ़रत व तबाही का ? सच्चा सौदा तो एक करने का है। वह ज्ञान मेरे मालिक में मौजूद था इसलिए मैं "परमतत्त्वस्य अवतारं" कहता हूँ। वैसे तो आप सब परमतत्त्व के अवतार हैं, मैंने कह दिया, आपके अन्दर भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम् भी है, इसलिए मैं आपसे किसी से भी तो घृणा नहीं कर सकता परन्तु उस ज्ञानी की बात करता हूँ।

उसके बाद है वैराग्य। यह वैराग्य क्या है ? वैराग्य का मतलब यह नहीं है कि भगवें कपड़े पहन कर आदमी वैरागी बन जाये बल्कि 'वैराग्य का मतलब है अन्तर का वैराग्य, वह जो दाता दयाल ने कहा हमारे मालिकेकुल के बारे में।—

तक दुनिया तर्के उकवा, तर्के मौला कर दिया,
तर्क का भी तर्क है, तर्क से दिल भर गया।

आहा! क्या कह दिया!! तर्के दुनिया तो बहुत करते हैं, कहते हैं हमने तर्क कर दिया परन्तु वह भी तर्के दुनिया जिन्होंने किया वह नहीं किया जो कहते हैं मैं भाग कर चला जाऊँ। अर्जुन ने कृष्ण जी से कहा कि मैं घबरा गया! (जो घबरा गया वह सन्त क्या!) कि ये मेरे रिश्तेदार, ये चाचे, भाई, ये मामा, ये सब मर जायेंगे। घबरा गया और कहने लगा कि महाराज! यह क्या!! इन गुरुओं को मारकर के, जिनको मारकर के मैं जीवित नहीं रह सकता इससे तो भिक्षा माँगना अच्छा है, मैं तो भागता हूँ! मैं भागता हूँ!! मुझे संन्यास चाहिए। यह वैराग्य नहीं होता। कृष्ण महाराज ने कहा, मूर्ख! यह बात सीखता है!! :—

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नाऽनुशोचन्ति पण्डिताः॥

अरे! जिसके बारे में तुझे चिन्ता नहीं करनी चाहिए उसके बारे में तू चिन्ता करता है कि शरीर

मारे जायेंगे। अरे ! क्या वे शरीर हैं जो उनके बारे में चिन्ता करता है और फिर बात करता है कि मैं बड़ा विद्वान् हो गया, प्रज्ञावादी हो गया, क्या मूर्खता है यह।

गतासूनगतासूंश्च नाऽनुशोचन्ति पण्डिताः॥

जिसको ज्ञान होता है वह जो मर गये हैं उनके बारे में और जो जाने वाले हैं उनके बारे में कोई चिन्ता नहीं करता, छोटी सी बात क्या कि उसको यह दुःख होगा, उसको यह होगा ! किसको दुःख हुआ ? आत्मा को दुःख नहीं होता। किसी दूसरे की चिन्ता करना, प्यारे नागो ! अपनी मूर्खता है। कृष्ण जी ने यह कहा कि तू भाग के जा रहा है। लोग कहते हैं गीता वैराग्य देती है, संन्यास देती है, बहुत मूर्खता की बात है। अरे ! संन्यासी तो वह बनके जा रहा था, कहा रुक, यहाँ ठहर और अपना काम कर। काम क्या कर ? मार, क़त्ल कर। क्यों ? उस वक्त उसका क़त्ल करने का व्यवसाय था। जो आपका पेशा है उस पेशे के अन्दर आप दत्तचित होकर सच्चाई से काम करते चले जायें, उसमें मर जाना बेहतर है।—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।

जो आपका 'स्व' आपकी आत्मा का 'स्व' है उसमें मर जाना बेहतर है, किसी दूसरे के काम में दखल नहीं देना, एक तो यह दृष्टिकोण है परन्तु इस धर्म से ऊँचा धर्म जो है वह ज्ञान का है। सब कुछ उस को बता दिया। वह भाग रहा था, कहा कि भाग के क्या करेगा तू, तुझे ज्ञान तो है नहीं! तुझे सच्चा वैराग्य तो है नहीं!! जब पत्नी ने कुछ कह दिया घर छोड़ के साधु बन गये, न इधर के रहे न उधर के रहे! तुम मनुष्य से प्यार नहीं करते जो साक्षात् भगवान् की मूर्ति है, तो उस भगवान् से क्या प्यार करोगे जो तुम्हें दिखाई नहीं देता। घर का कर्त्तव्य पूरा करो पहले। यही महाराज जी ने कहा है कि पहले सच्चे दिल से गृहस्थ को निभाओ। वह तो भागा जा रहा था!, कृष्ण जी बड़े राजनीतिज्ञ व नैतिक थे, बहुत कुछ बताया उसे। कहा कि अरे भई! क्या करता है!! अरे तू भाग जायेगा!!! अरे भाग जायेगा तो तेरी निन्दा होगी, लोग कहेंगे इतना बोर था, इससे तो मर जाना बेहतर है, तब भी नहीं समझा।

फिर उससे कहा अरे भई ! ये कोई मरने वाले हैं ? कौन मरता है, कौन मारता है ! आत्मा किसी का मर नहीं सकती :—

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥

वह परमतत्त्व जो सबके अन्दर है वह तो हमेशा अविनाशी है। उस ज़ात की शक्ति को, ज़ात को कोई नष्ट कर ही नहीं सकता। तू भागता कहाँ है ! नहीं समझ में आया। उससे कहा, अच्छा भई देखो ! चल कर्म कर, अपने कर्म करते हुए यह मालिक के समर्पण कर दे, वह सबसे ऊँचा है। वह भी समझ में नहीं आया। फिर उसको कहा, अरे मूर्ख ! यह दुनिया है कहाँ :—

तर्क दुनिया तर्क उकबा तर्क मौला कर दिया।
तर्क का भी तर्क है तर्क से दिल भर गया ॥

दाता दयाल जी ने महाराज जी को कहा कि तर्क़ का भी तर्क कर दे क्योंकि जिस तर्क में, जिस वैराग्य में, जिस संन्यास में यह ज्ञान है कि मैं वैरागी हो गया, मैं भगवें कपड़े पहन के बैठा हुआ हूं, वह

तर्क नहीं है बल्कि वैराग्य का भी वैराग्य हो वह ऊँचा है। तो उससे कहा, यह दुनिया क्या है? दुनिया जो है यह वहाँ से निकली है, प्रकृति है, गति है, आकाशगंगाएँ हैं सौरमण्डल हैं, अनेक लोक-लोकान्तर हैं। यह केवल कल्पना की बात नहीं है, आजकल का वैज्ञानिक इसे मान रहा है। दस-पन्द्रह दिन पहले अखबारों में आया था कि वैज्ञानिक कह रहे हैं कि दूसरे लोकों के जो बुद्धिमान् जीव हैं वे हमारे लोक से बातचीत करने की कोशिश कर रहे हैं। कोई नई बात नहीं है। तो क्या है दुनिया? यह सब उसी से निकला है। वह जो परमतत्त्व है उसका नाश नहीं होता, यह दुनिया निकलती है, फिर वापिस जाती है, निकलती है फिर वापिस जाती है, यह इस क़िस्म का जौहर है जैसे दाता दयाल ने कहा है कि वह परमतत्त्व ऐसा हीरा है जिसकी किरणें निकलती हैं तो ब्रह्माण्ड बन जाते हैं, जब किरणों को वह हटा लेता है तो वे लोप हो जाते हैं; परन्तु वह होता है, और यह जो सब है, यह है तो उसी का। जब उसको बताया; ज्ञान-विज्ञान बताया और कहा कि वह परमतत्त्व जो है उसका तो

कोई नाश होता नहीं इसलिए तू उसका ध्यान करके अपना कर्त्तव्य कर। फिर भी समझ में नहीं आया। फिर उसे भक्ति मार्ग बताया। फिर कहा, भई प्यारे! अच्छा तू ज्ञान नहीं समझता, तू ध्यान नहीं समझता, तू कर्म से भी नहीं रह सकता, तो उस मालिक को मान जो सबसे ऊँचा है, उसके आगे अपने आप को नमस्कार कर दे, बस। क्या कहा? कि अगर तू और कुछ नहीं कर सकता तो :—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।।

तू मेरा प्रिय भक्त है, अपने मन को मेरे में लगा दे। यदि नहीं मन लगता जैसे सब लोग कहते हैं आज मेरा मन नहीं लगता क्योंकि मन दुविधा में पड़ा हुआ है, इधर यह कि मेरे ये घर के काम हो जायें, इधर यह कि मालिक मिल जाय, तो मन नहीं लगता, तो अरे मेरा भक्त बन जा, मेरे से प्यार कर ले। यदि वह भी नहीं कर सकता, ध्यान नहीं कर सकता तो जो कुछ काम करता है, खाता है, पीता है, उठता है, बैठता है, जो करता है, मुझे ही समर्पण कर दे! तू कहता है कि मैं बीमार हूँ, मैं

कोई काम भी नहीं कर सकता, अच्छा भई, नहीं कर सकता, तो आखिरी बात बता दी :—

मामेवं नमस्कुरु ।

अरे ! मुझे नमस्कार ही कर दे। तब भी मेरे पास आयेगा; तू मेरा प्रिय है :—

मुझे सुमिरन कर आहुति दे, केवल नमस्कार ही कर दे।
मुझ में प्रिय समा जायेगा, सत्त के वचन कहता हूँ तुम से ॥

अब अर्जुन यह सोचने लगा यह कि मुझे ऐसा कहते हैं, अरे ! यह तो मेरा सखा है (मास्टर जी ! आप सखा ही समझते रहे परमतत्त्व को) तब उसको विराट् रूप दिखाया। वह जब दिखाया कि सारा ब्रह्माण्ड उसके अन्दर है तब काँपा, तब पग गिरा, कम्पायमान हुआ और कहा महाराज ! इस रूप को हटाओ, इस को हटाओ ! मैं डरता हूँ, मैं नमस्कार करता हूँ । उसके बाद उसे सौम्य रूप दिखाया। सब कुछ करने के बाद आखिर में यह कहा :—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

कि सब धर्मों को, दूसरे धर्म जो हैं वह करते रहो, लेकिन अब उनको भूल जा और सब कुछ छोड़ करके मेरी शरण में आ जा, ज्ञानी भक्त हो जा तब तुम्हें सब बातों से मुक्त कर दूंगा। तो वह मेरे परमतत्त्व आधार हैं, मालिक हैं। उन्होंने तर्क का भी तर्क दिखा दिया, (कहने की और बात है, कि मैंने तर्क कर दिया !) यह उनकी अवस्था थी :—

क्या है दुनिया ख्वाब है, और ख्वाब भी जाते फकीर।
दामे हिरसे मालोज़र में, वह नहीं हरगिज़ असीर।।

तो वैराग्य यह है कि दुनिया में रहते हुए, भगवें कपड़े पहनने की ज़रूरत नहीं है, दामे हिरस व माल व ज़र में रहते हुए उस का क़ैदी नहीं बनना है, यह उदाहरण मेरे मालिक ने क़ायम कर दिया। अरे ! पहाड़ में बैठ करके, संन्यास लेकर के कहना कि मैं वैरागी हूँ कोई बड़ी बात नहीं परन्तु जाओ अमेरिका के अन्दर, वहां रहो जहां पर आपका प्रलोभन है और वहाँ नहीं करो तो मालिक की कृपा से ही होगा। यह सच्चे वैराग्य

की ही बात है। और इतना वैरागी!, मैंने नहीं देखा किसी में, सिवाय अवतार के।

और ऐश्वर्य! ऐश्वर्य का तो क्या कहना है। ऐश्वर्य का मतलब है देने से, सब कुछ दे देने वाले थे। वह ऐश्वर्य नहीं कि राजा बन के बैठ जायें, राजा कोई चीज़ नहीं था उनके सामने। क्या ख़बर कितनों को करोड़पति बना दिया! कह देते थे, मांगो जो मांगते हो और वह देते थे। यह ऐश्वर्य! मुझे दिखाओ किसी सन्त में तब उसको परमतत्त्व का अवतार मानूं।

अब धर्म! धर्म क्या है? कि अनैतिक नहीं होना, यही नहीं बल्कि परम्परा को निभाना, यह महाराज जी ने कहा है कि परम्परा को निभाओ। एक उदाहरण सुनाऊँ :— सन् 1980 में महाराज जी मेरे पास आये। मेरे लड़के का उस वक्त विचार था एक अमरीकन लड़की से शादी करने का। मैंने कहा, महाराज जी! यह बात है। कहते हैं, भोगो! ऐसे ही कहा, कि तुमने भी तो जाति के बाहर शादी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

की थी ऐसे मखौल में कहा परन्तु मेरी पत्नी तो बहुत प्यार करती थी। अच्छा ले आओ उसको। लड़का आया, उसको कहा, लड़की से मैं पूछूंगा। लड़की आई तो पूछा, क्या तू गोमांस खाती है? कहने लगी, नहीं खाती। ठीक बात है। फिर पूछा कि अगर अरुण किसी कारण भारत चला जाय तो तू उसके पीछे जायेगी? जाऊँगी, जाऊँगी। कहने लगे, अच्छा! कर ले इससे शादी। कहा तो यह! परन्तु कला और ही चलाई। कला ऐसी चलाई कि तीन महीने के बाद वह कहता है मैं तो यहां शादी करता नहीं, मैं तो भारत में करूंगा, गजब कर दिया! और मुझे कहा, कि अगर यह तुम्हारा लड़का यहीं शादी कर ले, अरे! भारत में मत कहना, परम्परा के विरुद्ध है। क्या मतलब? कि परम्परा के धर्म को भी एक दायरे के अन्दर निभाना अत्यन्त जरूरी है। भावुकता के संरक्षण के लिए और समाज के लिए यदि लड़का लड़की शादी कर लेंगे तो गलत बात है, क्योंकि गृहस्थ की यह परम्परा है कि धर्म पर चलना व धर्म का अनादर नहीं करना।

ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, धर्म और अब यश यश कितना महाराज जी का फैला हुआ था। यश का सम्बन्ध होता है मन से, मन से प्रसन्न थे वह और श्री होता है लक्ष्मी का होना। लक्ष्मी का उन्होंने अपने लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया परन्तु क्या कोई कमी थी! तो ये छः जो पद हैं, जिसमें साक्षात् हो जाते हैं वह परमतत्त्व का अवतार है। हमारे अन्दर ये छुपे हुए हैं, हम मनुष्य हैं, हम मनुष्य से परमतत्त्व को जायेंगे तो हमें इन छहों को निखारना पड़ेगा इसलिए वह ज्ञान, वह वैराग्य, वह ऐश्वर्य, वह धर्म, यश और श्री मेरे मालिक का था इसलिए जब गुरु को नमस्कार किया जाता है उस वक्त चरणों का सुमिरन करें क्योंकि वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी हैं और तीनों से परे परमतत्त्व भी हैं, ऐसे परम पूज्य मेरे मालिक हैं।

अब 'मानवस्य परमम् इष्ट'—इष्ट क्या होता है? जो चीज हम चाहते हैं, जो हमारा लक्ष्य व उद्देश्य होता है। जीवन के बहुत से उद्देश्य होते हैं, चार उद्देश्य तो हैं ही जीवन के अर्थ, धर्म, काम और

मोक्ष। अर्थ भी उद्देश्य है इसी कारण महाराज जी नें कहा न ! कि सबसे पहले कमाओ। बच्चा पैदा होता है वह भूखा होता है, वह राम-राम नहीं करता। यह अर्थ भी एक इष्ट है। इष्ट वह चीज़ है जो हमारा लक्ष्य है, जिसे हम चाहते हैं और जिसे चाहना चाहिए। काम भी इष्ट है। काम कहते हैं मन की कामनाओं की तृप्ति को, जिसके अन्दर वह काम-प्रवृत्ति भी आ जाती है जिसके लिए शादी की जाती है। इसलिए आश्रम भी चार हैं, ब्रह्मचर्य आश्रम, अर्थ अर्थात् धन के कमाने के लिए और ज्ञान प्राप्त करने के लिए। गृहस्थ आश्रम, काम को तृप्ति के लिए और मनुष्य से मनुष्य का जो प्यार होता है उसका अनुभव करने के लिए ताकि मन सन्तुलित रहे। और धर्म के लिए तीसरा आश्रम है, वानप्रस्थ का जहाँ ज़्यादा समय है। मोक्ष के लिए जो इष्ट है वह संन्यास आश्रम है। इसी तरह से ये चारों हमारे इष्ट हैं परन्तु इससे परे, जिस इष्ट को पाकर के हम सब जितने भी हमारे दर्जे हैं, जहाँ सुख और दुःख है, जहाँ लाभ और हानि है, जहाँ जय और पराजय है

इनसे ऊपर उठ जाना है तो गुरु के चरणों में जाओ। परमतत्त्व के चरणों में जाना है और वह परमतत्त्व साक्षात् मनुष्य के रूप में आपके सामने थे इसलिए मैंने उनके बारे में कहा है "मानवस्य परमं इष्टं" अर्थात् सब इच्छाओं से ऊँची हमारी जो इच्छा है, सब के इष्ट, वह साक्षात् परम देव हैं।

फकीरं जगद्गुरुम्—जगद्गुरु इसलिए हैं कि उन्होंने हमें जगत् या संसार की बात भी बताई और यह भी बताया कि आदमी उच्चतम अवस्था में कैसे पहुँच सकता है। उन्होंने यह बताया कि भई! तुम संसार से अर्जुन की तरह भागो मत बल्कि पहले अपना कर्त्तव्य पूरा करो, गृहस्थ को अच्छा रखो, घर में शान्ति रखो, अगर शान्ति नहीं है तो मन नहीं टिकेगा। पहले प्रकाश आपको दिखाई देता था अब नहीं दिखाई देता, वहाँ कारण यह है कि घर में आपने अशान्ति कर दी, उसको दूर करना ज़रूरी है। बहू सास को, सास बहू को ताना देती हैं, नफ़रत करती हैं, यदि नफ़रत करते हैं तो वह कैसे सम्भव है। इसलिए पहले गृहस्थ में शान्ति लाना और

प्रेम से रहना ज़रूरी है। महाराज जी ने गृहस्थ के बारे में बहुत सत्संग दिये हैं कि इस संसार में पहले अपने आपको ठीक करो यदि नहीं किया तो साधना से नुकसान पहुँचेगा, यह बिलकुल सही बात है। जब मैं अमेरिका में जाता हूँ व बहुत लोगों को मैं कहता हूँ कि आप साधन शुरू करो। क्यों? क्योंकि उनकी बहुत सी ऐसी कामनाएं हैं जो तृप्त हो चुकी हैं, यहाँ वालों की अभी नहीं हुई हैं। वहाँ पर भौतिक अर्थात् जहाँ तक आर्थिक सम्बन्ध है वहाँ कोई बेईमानी नहीं करता कि चाय के अन्दर बुरादा मिला दे क्योंकि आप आसानी से, सीधे रास्ते से धन कमा सकते हैं, यह कारण है। वहाँ अगर कोई खाने में ऐसी मिलावट करे तो उसको फाँसी की सजा है। कत्ल करने की सजा फाँसी की नहीं है, मिलावट के लिए फाँसी की सजा है वहाँ के साम्राज्य में बहुत अच्छाइयाँ हैं इसलिए उनकी इच्छाएँ व कामनाएँ पूरी हैं। महाराज जी ने सन् 1968 में मुझे एक चिट्ठी लिखी थी, और मुझे कहा था कि तुम्हें मालूम है कि मैंने तुम्हें अमेरिका में क्यों भेजा था? क्योंकि अमेरिका वालों के पास शक्ति है, सत्ता है, और अगर वे पथभ्रष्ट हो गये

तो संसार का विनाश कर सकते हैं परन्तु उनके अन्दर मालिक को मिलने की इच्छा व जिज्ञासा है। क्यों है ? वे मांस खाते हैं, शराब पीते हैं, उनके पास हर किस्म की सुविधाएँ हैं परन्तु उन्होंने कहा, क्योंकि भौतिक समृद्धि इतनी हो गई, इतनी हो गई कि उसके अन्दर वह बिलकुल चरम सीमा तक पहुँच गये। जब आप ऊपर चोटी पर पहुँच गये फिर वहाँ से तो नीचे उतरना ही पड़ेगा ! आप भौतिकता की चोटी पर पहुँचे तो नीचे उतरना पड़ेगा और बात सही थी। मैं इसलिए कह रहा हूँ कि जब आदमी अपने शरीर को सारा दिन काम करके थका लेता है तो नींद बहुत अच्छी आती है। इन्होंने अपने आप को भौतिकता में लीन (विलीन) करके थका दिया है इसलिए यह बिलकुल सही बात है। सन् 1952 में मिल्लर नाम का एक अमेरिकन यहाँ खोज करने आया था कि भारत में सामाजिक व्यवस्था कैसी है। हमारी यूनिवर्सिटी में आया तो मेरे से उसकी बात हुई। मैंने कहा, तू बूढ़ा हो गया (वह साठ वर्ष का था), तू अब क्या खोज करेगा ! कहने लगा मैं खोज कर रहा हूँ क्योंकि मेरे पास

बहुत धन है, मैंने इतना कमा लिया, इतना कमा लिया कि यदि मैं और कमाऊँ तो उसमें से 90% सरकार ले जायेगी, मैं काहे को दूँ। मैंने कहा, तुम्हारे पास सम्पत्ति (wealth) कितनी है, क्या तू खुश है? कहता है, नहीं। क्यों।, उसके शब्द "I am Oppressed by wealth" अर्थात् मैं धन-सम्पत्ति से दुःखित हो गया हूँ, इतनी है। अब हमारे नवयुवक जो हैं वे तो पश्चिम का अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रहे हैं। वह जो जिज्ञासा है उस जिज्ञासा को हमेशा के लिए तभी पूरा किया जा सकता है जब आपके घर के ये सारे काम ठीक हैं, इसीलिए महाराज जी ने दोनों का ज्ञान दिया है। गृहस्थ का ज्ञान दिया है यद्यपि आपको फटकार लगती है कि तुम आते हो पुत्र मांगने के लिए, यह मांगने के लिए, वह मांगने के लिए फिर दे भी दिया करते थे तो वह इसीलिए कहते थे कि बहुत कम लोग हैं जो कि परमतत्त्व को जानने के इच्छुक हैं, हालांकि उनके जीवन का उद्देश्य यही था इसलिए मैंने महाराज जी को परम इष्ट कहा है, मनुष्य का परम इष्ट। ऐसे गुरु आपको मिलें तो

आपको उनकी शरण में जाकर के फिर किसी चीज की जरूरत नहीं रहती :—

जब गुरु की शरण पाई, आस पूरी हो गई,
मिल गई गुरु पद से जब, माया से दूरी हो गई।

माया—सब सन्त, महन्त माया के अन्दर तो हैं परन्तु माया से दूरी कैसे हो गई ? दूरी का मतलब मैंने उसको बताया कि यह नहीं कि भाग जाना है। अर्जुन तो भागने वाला था उसको कहा, नहीं ! तू युद्ध कर। बात क्या थी ? अर्जुन ने अब तक शरणागत नहीं ली थी, शरणागत नहीं हुआ था, वह तो अपनी बुद्धि का प्रयोग कर रहा था। वह क्या कहता था ? अरे ! ये मेरे पूज्य, जिनकी पूजा मुझे फूलों से करनी चाहिए उनको मैं अपने वाणों से मारूँ, यह कैसे हो सकता है ! दादा, परदादा उधर थे, पोते इधर थे तो यह देखकर के वह घबरा गया था और कहने लगा कि नहीं ! लड़ाई नहीं होनी चाहिए। फिर उसने युद्ध के दोष बताये। वह कहता है कि कोई युद्ध जब होता है तो नुक्सान ही होता है और यदि ये मूर्ख दुर्योधन वाले नहीं जानते कि युद्ध करने से विनाश हो जायेगा, स्त्रियाँ दुष्ट हो जायेंगी,

वर्ण-संकर पैदा हो जायेंगे और पितर जो हैं वे नर्क में पड़ जायेंगे तो हमें तो जानना चाहिए महाराज ! आह ! ऐसा लगता है कि बड़ी विद्वत्ता की बात कर रहा है कि हम काहे को युद्ध करें, मुझे जाने दो। कृष्ण जी ने उसे कहा, मूर्ख ! तू बात क्या कर रहा है !! क्या सचमुच उसे वैराग्य हो गया था ? अरे ! वैराग्य तो तब आता है जब गुरु ज्ञान देता है, जब कोई इच्छा संसार की ऐसी नहीं रहती जो कि तृप्त हो सकती हो और तृप्ति नहीं हो। मैं अपने अनुभव से यह जानता हूँ कि पहले कुछ चीजें ऐसी थीं जिन को मैं चाहता था कि ये नहीं होनी चाहिएँ, उस के लिए कुछ प्रयास करता था, अब गुरु की कृपा से प्रयास नहीं करना पड़ता अपने आप होती हैं, माया अपने आप ही हो जाती है। क्यों ? यह नहीं ! कि आप का काम नहीं बनता, काम तो बनता है, वह अपने आप ही बन जाता है। अर्जुन चूंकि शरणागत नहीं हुआ था और वह कह रहा था कि मैं वैरागी बनना चाहता हूँ तो उसको कहा नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता कि तुम बिलकुल भाग के चले जाओ। जब उसको यह बताया कि ठीक है, यह बात सही है

कि विषयों के अन्दर अपनी सुरत को लगा देने से फिर आदमी नीचे गिर जाता है लेकिन स्थितप्रज्ञ वही है जोकि अपनी इच्छाओं का दास नहीं बनता बल्कि उ-दास अर्थात् ऊपर का दास हो जाता है परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि वह सुनता नहीं, देखता नहीं, खाता नहीं, पीता नहीं। उसकी हालत ऐसी हो जाती है कि जो उसकी इछचाएं और कामनाएँ हैं वे अपने आप ही पूर्ण हो जाती हैं। इस की मिसाल दी है दूसरे अध्याय में:—

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ।।

जब वह गुरु के शरणागत हो जाता है तब उसका जो चरित्र है, उसका जो व्यक्तित्व है वह ऐसे हो जाता है जैसे कि एक समुद्र हो जाता है। नदी में तो बाढ़ आ जाती है और वे बाढ़ में आई हुई नदियाँ हर चीज को बहाती हुई व नाश करती हुई चली जाती हैं लेकिन वे नदियाँ जब समुद्र में प्रवेश करती हैं तो समुद्र अपनी मर्यादा से चलायमान नहीं होता, समुद्र में बाढ़ नहीं आती। गुरु की कृपा से आपका व्यक्तित्व, आप की शख्सियत हो ऐसी गई है कि सभी

कितनी ही लगाओ फेल हो जाती है। इसको तो समझना या तो मालिक के वश की बात है या फिर ये सन्त ही जानें। तो दयाल स्वरूप परम सन्त ताराचन्द जी महाराज अचानक एक थैले में अपनी ज़रूरत का थोड़ा सा सामान डाल कर रात को अकेले और पैदल ही दिनोद से भिवानी 12 कि. मी. चल कर 4 बजे, कहने का अर्थ 2 घण्टे से पहले हो पहुँच कर चण्डीगढ़ की गाड़ी में सवार हो गये। जिनका पैदल चले कम से कम 15 वर्ष से भी अधिक हो गये, दूसरी बात जब भी बाहर जाते हैं तो इनके साथ 15-20 आदमी ज़रूर होते हैं परन्तु इस ठिठुरती सर्दी में अंधेरा रात में और उस समय भी बिलकुल चुपचाप रास्ते में एक गाय, एक साँड और बीच जंगल के एक नील गाय के सिवाय कुछ भी उनको नहीं मिला। ऐसा क्यों ? उनसे जब पूछा गया तो उसी सादगी के भाव में कहा—मैं तो आराम से आ गया, मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई, न ही किसी प्रकार का ख़्याल आया। और रास्ते में कुछ भी नहीं खाया सिर्फ़ दो दाने खजूर के ही खाये जो उनके पास थे। सुबह 11 दिसम्बर को 2 बजे चल कर होशियारपुर

सायं 4 बजे पहुँचे तो दरवाज़े पर नारायण दास जी से भेंट हुई। नारायण देखते ही रो दिये और कहने लगे—हज़ूर महाराज! आप अकेले कैसे आये, हमने इस प्रकार तो आते आपको कभी नहीं देखा, ये आप की क्या मौज़ है? हज़ूर महाराज ने हँस कर कन्धा थपथपाया और कहा, दिल को दिल से राह होती है; प्रेम ने बुला लिया, बस। परम सन्त मानव दयाल जी महाराज के पास पहुँचे तो उनकी खुशी का क्या ठिकाना! कहने लगे—मैं आज यह क्या देख रहा हूं। यह मेरी समाधि है, मेरा स्वप्न है या वास्तविकता है? उनको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं आ रहा था। कहने लगे—सन्त जी! हमने तो आपको आज ही पुकारा था पत्र भी आपको आज ही लिखा था, लेकिन आपके पास तो कोई गुप्त ही टेलीफोन था, मैंने आज रात 2 बजे आपको याद किया। दयाल स्वरूप जी महाराज कहने लगे—मैं दो बजकर दस मिनट पर चल पड़ा। सभी पास खड़े दूसरे व्यक्तियों की आँखों में खुशी के आँसू ढुलक रहे थे और दो परमतत्त्व, जो दो शरीरों का रूप धारण किये हुए ही एक परमतत्त्व बन कर एक दूसरे की पीठ सहला रहे थे।

मानव दयाल जी ने कहा—आप तो वास्तव में सिद्ध पुरुष हैं तो दयाल स्वरूप जी ने कहा-आप क्या कम हैं। जा कर रात को मेरे कमरे में खड़े हो गये, कहा चलो मौन इस बार होशियारपुर हो करवा पड़ेगा और अब कह रहे हो यह क्या जादू है। वाह-वाह मानव दयाल जी !! मैं बन्धन में बन्धा हुआ हूँ। परम दयाल जी ने मुझे लिख दिया था और कहा था—मेरे बाद आप मन्दिर का ख़्याल रखना, सेवा और मदद करते रहना। यह तुम्हारी ड्यूटी है, यह मन्दिर भी तुम्हारा ही है, मैं आप के अगं-संग साथ रहूंगा। उसी बन्धन के मुताबिक भाई साहिब मानव दयाल जी ! मैं आप में परम दयाल जी का ही रूप देखता हुँ। अपने कर्तव्य से बंधा हूँ इसीलिए बिना किसी को बताये ही मैं चला आया हूँ। किसी को साथ नहीं लाया, अकेला आया हूँ। कोई तकलीफ़ नहीं हुई। मौज है, मौज के आधीन आया हूँ।

अब यह है बात, समझ सकता है कोई। इसी बात को तुलसी साहिब लिखते हैं:—

अगर कोई कहे सन्त मैं चीन्हा।
तुलसी हाथ कान पर दीन्हा॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कौन समझ सकता है मस्त फ़कीर की मौज को, जब जो चाहा चले गये, जब जी चाहा आ गये। इनके इस तरह से आने-जाने में राज़ होता है, गुप्त भेद होता है, उसको आम आदमी क्या समझे।

ये मालिक के प्यारे मौज आधारे।
करते हैं वही जो मौज़ पुकारे।
इनकी गति-मति कौन निहारे।

इनको कोई बन्धन नहीं रोक सकता, जैसी-2 मौज़ होती है वही करते हैं, हम आम संसारी लोग इसको नहीं समझ सकते।

भगत राम जा
दुल्हैड़ पडियार,
जिला ऊना (हिमाचल प्रदेश)

शोक समाचार

बड़े खेदके साथ सब सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि जगत माता (श्रीमती मिदना बाई) जी, धर्मपत्नी लाला मोतीलाल जी, इन्दौर 9-12-82 को अपना पंचभौतिक शरीर त्याग कर सदा के लिए परमधाम सिधार गई हैं। वो हजूर परम सन्त परम दयाल जी महाराज की परम अनुयायिनी थीं। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे।

मानवता मन्दिर का सारा परिवार तथा ट्रस्ट के सभी सदस्य इनके देह त्यागने पर श्रद्धाञ्जलि सहित शोक प्रकट करते हैं और उनके शोक सन्तप्त कुटुम्बियों से सहानुभूति प्रकट करते हैं।

सैक्रेटरी

हजूर परम सन्त मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज का टूर प्रोग्राम।

15-1-83—होशियारपुर से देहली के लिए प्रस्थान, कश्मीर मेल से। ठहरने का स्थान—
श्री जसवन्त राय वधवा,
R-542, न्यू राजिन्दर नगर, नई दिल्ली
Telephone No.—588793.

17-1-83—देहली से 2 बजे काजीपेट के लिए प्रस्थान, Andhra एक्सप्रेस से।

सत्संग कार्यक्रम हन्मकोण्डा :...

राधास्वामी सामूहिक सत्संग, राजपूतवाडी

19 जनवरी 1983	बुधवार	सत्संग,	सुबह 9 से 11
हिन्दी और तेलुगु में			शाम 6 से 8
20 जनवरी 1983	गुरुवार	सत्संग,	सुबह 9 से 11
	,,	,,	शाम 6 से 8

हजूर मानव दयाल जी महाराज इस सत्संग में अंग्रेजी में वचन फरमायेंगे में। 21 जनवरी 1983 शुक्रवार को हजूर परम सन्त परम दयाल पोरेमुर्गा साहब, हजूर मानव दयाल जी महाराज सुबह 8 बजे दाता दयाल शिशु मन्दिर के कार्यक्रम में अध्यक्षता करेंगे। इस अवसर पर वार्षिक प्रतिवेदन पढ़ा जायेगा।

उसी दिन कार द्वारा हुजूराबाद को रवाना होंगे। वहाँ के सत्संग भवन में सुबह 11 बजे सत्संग की अध्यक्षता करेंगे। और वचनामृत की वर्षा होगी। सत्संग के उपरांत 1 बजे करीमनगर रवाना होंगे।

सत्संग कार्यक्रम करीमनगर।—

21 जनवरी 1983 शुक्रवार सत्संग, शाम 6 से 8 बजे

22 जनवरी 1983 शनिवार विश्राम। सुबह करीमनगर से सिकिन्द्राबाद को रवाना होंगे।

सत्संग कार्यक्रम सिकिन्द्राबाद।—

23 जनवरी 1983 रविवार सत्संग, सुबह 9 से 11 बजे ए. वी. सि. गेर मारेडपल्ली (पश्चिम) सत्संग भवन, सिकिन्द्राबाद। दोपहर 3 बजे बांसवाडा कार द्वारा रवाना होंगे।

सत्संग कार्यक्रम बांसवाडा :—

24 जनवरी 1983 सोमवार सत्संग, सुबह 9 से 11 बजे
शाम 6 से 8 बजे

बांसवाडा में नूतन सत्संग भवन का शंकुस्थापन।

25 जनवरी 1983 मंगलवार बांसवाडा से सिकिन्द्राबाद रवाना होंगे।

सत्संग कार्यक्रम हैदराबाद :—

26 जनवरी 1983 बुधवार सत्संग, सुबह 10 से 12 बजे बमुकाम सुख भवन चारकमान हैदराबाद।

27 जनवरी 1983 गुरुवार सत्संग, सुबह 9 से 11 बजे बमुकाम चितल बस्ती अंजय्या आडिटोरियम कम्यूनिटी हाल, मासब ठांक, हैदराबाद।

28 जनवरी 1983 शुक्रवार सत्संग, सुबह 9 से 11 बजे बमुकाम दयाल फकीर मानवता मन्दिर, सिदम्बर बज़ार, हैदरावाद (होटल राजधानी के समीप)

28-1-83—सायं, हैदराबाद से बम्बई के लिए प्रस्थान।

31-1-83—को हवाई जहाज़ द्वारा विशाखापटनम जायेंगे

2-2-83—विशाखापटनम से बम्बई को वापिसी।

4-2-83—सायं, बम्बई से इटारसी के लिए प्रस्थान।

6-2-83—इटारसी से कटनी के लिए प्रस्थान।

9-2-83—कटनी से राधास्वामी धाम के लिए प्रस्थान।

13-2-83—राधास्वामी धाम से खानपुर के लिए प्रस्थान।

15-2-83—खानपुर से आजमगढ़ के लिए प्रस्थान।

17-2-83—सायं, मुरादाबाद और बिलारी के लिए प्रस्थान।

21-2-83—देहली वापिसी।

नोट :—

इन्दौर, उज्जैन, मथुरा, अलीगढ़ और सहारनपुर का प्रोग्राम अगले 'मानव मन्दिर' में छपेगा।

शुद्धि

दिसम्बर के मानव मन्दिर में पन्ना 25 पर ऊपर की तीन लाईनें ऐसे पढ़ें :—

ऊपर (के लोक में जो अनर्जी) का भण्डार है सन्त उसको सत्तलोक कहते हैं और यहाँ, वह झोपड़ी में, तुम्हारी अपनी सुरत का भण्डार है। इस में से एक शोशा (रचना या धार) मैंपना बन के निकलता है जो अपने आप को "मैं" समझता है। इस में से फिर ....

MANAV MANDIR

(Monthly Journal)

ENGLISH SECTION

January 10th 1983 Hoshiarpur Punjab India.

Board of Editors :

Dr. Paras Ram Aggarwal General Editor
Shri S. N. Bhardwaj Chief Editor.
Mrs. Bhagya Sharma
Shri Hari Prakash Mehta
Shiri mati Suraksha Verma

A WORD TO THE READERS

By

Param Sant Manav Dayal Ji Maharaj

I have been asked to say a word to the readers of the newly introduced English section of the Manav Mandir, which is a befitting gift to our satsangies who cannot read Hindi so well. It brings to the English readers the richest philosophy and teachings of Spiritual Humanism as preached, practised and promulgated by Param Dayal Ji Maharaj, the greatest saint and Avatara of our century.

I call his philosophy Spiritual humanism because it awakens in man that element of everlasting category, that ground of human existence which is indestructable eternal and changeless in spite of the physical, mental and intellectual changes in human personality. Param Dayal Ji Maharaj has expounded this truth in a way, no Philosopher, saint or a sage has ever done before. His sentences which come from the depth of his own spiritual and even Superspiritual experience go deep into the heart of the reader and bring about a metamorphosis in his total personality. The beauty of his expression lies in the simplicity of the language which can be understood immediately by a layman, Philoso-

pher, saint or a scientist without any commentry or paraphrase.

Humanism must be such a practical way of life as can be made available to kings and commoners alike. It must be such a technique that is free from all intricacies and Philosophical jargon It must be straightforward, frank and fair to all concerned. The teachings of Param Dayal Ji Maharaj pass all these tests and much more. These teachings are scientific, because they are the result of his own research or the search for the Supreme Reality. No saint has ever explained all the stages of spiritual development leading to the highest experience which goes beyond God, beyond Brahman and beyond Parambrahman so elegantly and scientifically as Param Dayai Ji Maharaj has done. Even by reading his discourses any intelligent person can actualize the potential perfection in him without any external aid. That is why this humanism has been designated by me as Spiritual.

There are many misunderstandings about the word" spiritual". Many persons confuse this word with something which is concerned with ghosts or disembodied spirts. Far from it, this word refers to the essence in man, the Param Tattva in him which when actualised, not only takes him away from the realm of disembodied spirits, but also beyond gods and angels and even beyond God who is the creator of this world. This world is full of dualities of pleasure

and pain, health and disease, loss and gain and praise and plame etc. The realization of the Param Tattva lifts man from these levels of duality to the loftier heights of harmony and peace, pure love and understanding This is the real meaning of the word spiritual. Param Dayal Ji 's teachings expound such a philosophy. That is why I call it SPIRITUAL HUMANISM.

The Purpose of introducing the English section of our journal is to expose Spiritual Humanism to the English knowing readers and particularly to the western readers whether of Indian origin or otherwise so that East and west, Science, philosophy and religion may be understood in the right perspective to bring about an integrated view of Man, Universe and God. It would be our endeavour in this section, to expose Spiritual Humanism gradually, systematically and scientifically in the pages of the English section with a view later on, to publish the same material in the form of a book as the permanent literature for the benefit and guidance of all in future. We would welcome questions and comments so that the likes and dislikes of the readers are kept in view. Not only this, I would go to the extent of inviting questions fron the readers even if those questions concern the spirtual development and experiences of the individual readers. This method of questions and answers is in keeping with the tradition of the Upanishads the highest spiritual philosophy availabla in the world. It is also in keeping with the

tradition of the philosophy of Saints which lays down the three prorequisites of Guru (Living Guide), Satsang (Discourse) and Nama (Spiritual initiation).

All these three steps can possibly be adopted, first through reading these pages, and, finally even Namdana can be received after a good deal of the study of the English section which has been introduced for the benefit of all. with this hope, I extend to you all, happy New Year greetings, blessings and Radha Swami.

Yours in Faqir

January 1 st, 1983 Manav

LOOK ON SPECTATOTS

I watched the football match
and saw the spectators go wild !
I smiled as someone said,
'Its' interesting to watch spectators
go wild with glee'

Spectators ! The word rang thru'n' thru'.
Spectators ! isn't that what we are ?
Watching our destiny, our fate,
watching quietly, submissively,
accepting the changes in our lives
turning round
whereever our fate seems to turn,
just like the snakes, gliding
to the movements of the snake charmer
Spectators !
I watched the slight drizzle
and the loading of the trucks,
Seeing what was my home,
Being packed in a truck to be taken
far away
To establish a new home,
Seeing what had been mine,
No longer to be mine

I watched it - quietly, submissively;
I saw the friends coming and going;
I saw the plane land
back on earth—to reality;
I waited in anticipation
Tears streaming down
Clinging to my brother.
I saw the box being brought in
lifeless !
I watched, quietly, submissively
I watched the flames
Carrying the remnants of one so dear;
go up
I watched it at peace
quietly and sumissibely,
Spectators ! Spectators ! Spectators !
Watch-quietly and submissively
Watch spectators ! watch !
Quietly and submissively !

Agam Jung
November, 1981.

Editor's Remarks :

This is a unique Contribution of Miss Agam Jung the Grand danghter of Param Dayal Ji Maharaj. She exhibits Spiritual depth at this young age.

Faqir Baba

Yugavatara

According to the perenial philosophy of the Bhagavadgita which is the quintessence of Sanatana Dharma, the Supreme Being incarnates Himself in every age. In the fourth chapter of this immortal book, Lord krishna points out that in the beginning the secret path of the union of the soul (Radha) with the Param Tattva (Swami) was taught to manu. manu taught this secret path to his son Ikhshvaku and gradually it was passed on to the royal sages like Janak etc. But on account of the passage of long time. this path was forgotten. He further stated that the same path was being taught to Arjuna by Lord Krishna Himself as the Divine descent of the Param Tattva. He categorically asserted:

Yada Yada hi Dharmasya,
Glanir Bhavati Bharata
Abhyuthanam Adhrmasya
Tadatmanam Sri Jamyaham

That is:

And Whenever on rhis earth
Virtue is Overcome by vice,
I always take a human birth:
Oh Arjuna, this is my device:

It has further been stated that such an Avatar Incarnates himself in every age according to the need of reestablishing order and truth by eradication evilimindedness and by protecting goodness. Keeping in view this universal truth I have stated in the following Sanskrit verse:

Param Tattvasya Avataram
Param Pujyam Satsanginam
Manvasya Paramishtham
Faqiram Vande Jagatgurum.

Salutations to that Supreme *M*aster of cosmos, who is the Divine Descent of the Ultim-

ate Reality, who is the most worshipable Entity and Ideal of the aspirants and who is the highest goal and destination at which man can ever aim'

Why have I designated him as an Avatara? Let me first explain this fact in a very plane and simple language. The word Avatara literally means a divine descent or one who has descended from the Param Dhama or the Supreme Home. Even though Param-Dayal Ji himself said many times that he was the Avatara of TRUTH that he had come down from Anami Dhama to expose the Truth about the nature of man, nature of Guru and to lead the suffering humanity to the Final abode, yet he did not elaborate this fact. He did this on purpose. The purpose was to avoid the masses who otherwise would have mobbed him and later on created a new religion as a separate community out of him. However very few people close to him ever unaerstood him as an Avatara. They always thought that he was a Guru or a saint like many who had come before him and had declared themselves as such. We

should remember that an Avâtara always behaves like a human being so that he may set an example that ordinary human being in spite of his human weaknesses is capable of becoming perfect in one life. An Avatara is born perfect because he has come down from the Supreme Reality and has not ascended from any lower levels or even a human level. Ordinary Jivas ascend from lower levels or from human level rising higher and higher in many lives. But an Avatara descends from above in human form to show how supreme God can live as a human being. An ordinary Jiva who is potentially perfect is unaware of his potentiality of perfection and therefore he cannot free himself from the cycle of lives and births single handed. He depends on some one else, some Guru to lead him through right knowledge to the highest goal even though he is perfect in his own self. The Avatara is aware of his mission but he pretends not to be so aware. He does adopt a Guru and his Guru also knows that the initiation of the Avatara is

a necessary formality . It is so because no ordinary soul can ever attain perfection without adopting a perfect Guru or one who has realised his or her inner nature of being Pure Sat, Pure Essence and Sakhshi Bhava or the sense of being beyond body, beyond mind and beyond even soul as the causal body. It is quite likely that the Avat-ara had come earlier in human form and gone back to the Parm Dham. But in the present birth he has descended in spite of having reached the state of Param Dham and Param Tattave earlier. This fact has been mentionec by Date Dayal Ji; The Guru of Param Dayal Ji Maharaj very clearly in poem designated to param Dayal Ji. In this poem Data Dayal Ji points out that in a previous life, Pandit Faqir Chand Ji maha-raj was Guru Hargovind and in that life he had not only attained perfection himself, but had also released many other bound souls. In the very beg nning of the poem, he writes,

"Tiji Katha sunaon Tujh Ko Sun Sun Ke Chit Lana,
Aur Ki Nahin Katha Yeh Pyare Teri Katha Sunaon."

'I relate to you third story. You must listen to it attentively. This is not the story of any one else, but that of your ownself. These words have been overlooked by the masses and even by very close disciples of Param Dayal Ji while reading that poem. It is at the end of this poem that the immortal words given below are mentionad:

"Tu To Aya Nar Dehi Men Dhar Faqir Ka Bhesa,
Dukhi Jiva ko Ang Laga Kar Le Ja Guru Ke Desa."

That is, "you have descended in human form and adopted the garb of a Faqir so that you must lead the suffering souls to the abode of the Supreme God" "Who comes to take human form ? Only the Supreme Being. Ordinary Jiva does not come in human form, he either comes from the lower form or from human form without his own will. Only the Avatara assumes (Dharan Karta Hai) the human body as did Lord Krishna who is the highest Avtara among the Ten Avataras, because he was also Param Tattva instead of being an incarnation only as was Param Dayal Ji Maharaj. Among the Avataras of saints Param Dayal ji was and is the Param Tattva in human form. That is why Data Dayal Maharishi Shivbrat Lal Ji Maharaj used the words, "Dhar Faqir Ka Bhesa", and "Tu To Aya Nar Dehi Men" etc. When I Pointed this out in one of my Satsangs, one very close Sat Sangi of Param Dayal Ji Maharaj remarked, "Only today my attention has been drawn to the meanings of

the words "Nar Dehi" and Dhar Faqir Ka Bhesa". Not only this, but the words of Data Dayal Ji in another poem are crystle clear. He says :

"Na Main Ram Krishna Ka
Sewak Eash Brahm Nahin Janun
Main To Nama Faqir
Diwana Sab se Barh Kar Janun."

That is, "I am not the servant of Rama or Krishna, nor do I care for God as creator or even as immanent invisible Brahman. I am fascinated only by the name of Faqir who is the highest." Does this mean that Data Dayal Ji was deriding Krishna ? No, never. He has stated that Lord Krishna who was the Supreme Person and as Krishna he did show to Arjuna the Virat Rupa (Cosmic form) with his own Sidhi. Here he is only pointing out that in our present age and according to the present circumstances the Avatara of Faqir is the highest. It is a pity that people even very close to him during his physical manfestation continued to treat him as normal Guru. Let me draw the attention of such misled disciples to the words of Param Dayal Ji Maharaj who says; "I have done the work of a Guru, I am not a Guru "Why should he call himself a Guru when he is actually an Avatara? Many Vachak Gyanis who think that they understand Parma Dayal Ji and who live at an imaginative level of Jivanmukti thinking that they do not need any more Satsangs even though

Param Dayal Ji Maharaj has categorically exhorted me to carry on his mission of Satsang, have been mistaken in their lives. They have been mistaken in not regarding Param Dayal Ji as an Avtara and thinking all the time that he was just a Guru. I am declaring this truth, because I had understood him fully during his physical presence among us. I had no doubts about anything, because he had given me the highest Gyan which smashed all my misunderstandings and which had awakened me to the highest reality in my practical life during his life time.. When he came to U. S. A. in 1980 and stayed with me for a long time, he remarked to Dr. Paras Ram, "Paras Ram I will change I C. Sharma and make him like myself, before I leave this body". These words were told to Dr. Paras Ram in private at midnight in Cleveland and Dr. Paras Ram conveyed this to me and Bhag. Next day these words were confirmed by Param Dayal Ji himself. What I mean to say is that he did not tell everything to every body. He only gave hints to the wise. What he could do and what he did cannot be understood by man's ordinary intelligence. A Guru is different from a perfect Avatara. An Avatara changes the course of his time. He reveals the unrevealed truth in a new manner. He acts according to the needs of his own time to reveal the truth by setting his own example. Our time needed a very simple and staight forward path to attain perfection without the intricacies of

Philosophy, metaphyisics and theories· But at the same time, he also explains the truth with reference to that level of knowledge which exists during his life time as an Avatara. That is why Param Dayal Ji did not oppose science. He eorroborated his own experience with science. Rather he proved the theories of modern science cn the basis of his own experience which went beyond science, beyond philosophy and beyond any Yoga including Surat Shabda Yoga of the Radha Swami Faith. He had to go beyond it to awaken people especially to awaken the teachers of the spiritual sacience. He has proved the truth of the statement; "It is not a sin to be born in a particular religion or deno- mination, bnt it is foolishness to die in it (That is not to go beyond it through experience). "I will continue a series of articles to throw more light on this tıuth.

In the mean time let me explain why have I called him Jagat Guru. Jagat means that which changes and Jagat Guru is that who goes beyond all changes and whose teachings always remain permanent inspite of the changes in the whole cosmos. Param Dayal Ji has stated this in many Satsangs. He has said that Guru does not mean anything that changes. Guru is that unchangeable Surat, the eternal part of hnman self, the Sakhshi which is thc same in every man, but which has not been realized by every one. The perfect Guru is aware af this ever-lasting reality, whereas ordinary soul

is unawaae of this truth. Thats why Satsangs are necessary to awaken this truth in the Satsangies. That is the meaning of the statement. "A gaye Sat sang men to Sang Sat ka Ho Gaya; Durmati Jati Rahi Aur Guru ke Mat ka Ho Gaya: "That is, when a disciple comes to attend the Satsang, he comes in touch with the Ultimate Being of his Guru whom he wrongly takes to be human. After knowing tnis truth, the wrong sense of separation is lost by the disciple and he becomes aware of the unity behind diversity."

Durmati means wrong way of thinking. What is the wrong way of thinking? The wrong way is to forget that every one in reality is the manifestation of Param Tattva. When one forgets this, one hates, one cheats, one exploits others and tells lies for his own selfish ends. In other words one becomes inhuman unloving and hater of others The right view or the removal of Durmati means understanding and practising humanity and love which unites. love unites because in Surat all of us are one, are united. Hatred. divides and division or separation is the opposite of true human nature. That is why the final verdict is "Munushya Bano" Be perfectly human. In order to be perfectly human, we must stop using unfair means to gain our selfish desires especially at the cost of the benefit of others. It is in this sense that Sant Tulsi Dass exhaltad the virtue of helping others He said,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

"Par Hit Saris *Dharam* Nahin Bhai "Par Pida Sam Nahin Adhamai."

That is, "there is no religion higher than the duty of benefitting other and there is no meanness worse than causing pain to other." This simple behest is the key to perfection. It is the key both to the happiness of man here and the bliss hereafter. How Param Dayal Ji has most beautifully laid down the rules and regulations for the attainment of Manavta which is the real goal of Sant Matt as that of the Eternal Path called Sanatan Dharam would be revealed in the articles, that follow in the English section of the Manav Mandir henceforward.

MANAV
DAYAL.

—o:o—

PARAM DAYAL JI's LECTURE

TO

AMERICAN LADY—1971, NEW DELHI

I am truly a saint. My purst daughter ! I want to tell you how the soul transcends time and space. The medical science has discovered that the middle of the forehead there is an organ, which seems to have no significrncance in human brain This may be called third eye. This third eye exists in the animals as well as in the birds. In the case of animals and birds it does have a special function. Whenever the e is some danger unexpected heavy rainfall or storm the animals and birds come to know about it before hand and flee from danger. Thus the thiad eye is useful in animal kingdom. Though the medical science has not yet discovered the function of the third eye, yet the saints know how it functions. In the case of man when it is opened the cosmic rays vibrate in it and forewarn man about the dangers. The animals and birds are forewarned because of the similar function. The med cal science is trying to find out ways and means to activiate this third eye of man.

Yesterday I had told you that Surat or spiritual attiention or self works or functions in physical body and in mental realm of man. When this Surat is fed up with body, mind and senses it craves to go beyond them, because all these are the limitations and cause sufferings to the self This enchantments called Vairagya or spontaneous detachment This leads man to spiritual path. All great saints and spiritually realized persons have experienced similar sufferings in their life and these sufferings have inspired them to follow the spiritual path and to emancipate the surat or self from the physical and the mental realms No one can experience the function of the third eye without Vairagya or spontaneous detachment. I don't know why you have chosen to follow this path. But I can guess that there must have been some kind of dissatisfaction experienced by you. I do not know this, but you do. This dissatisfaction may be due to three causes. One cause is some physical ailment, the other is some physical impression from outside, the third may be some domestic trouble from husband and children. Whatever might be the circumstances, whenever a person seeks this path, it is because he suffers from ignorance of some kind. The Buddha also was dissatisfied by the external world. He saw a sick man, he noticed public suffering and also saw a funeral procession. These sights stimulated him to contemplate within himself and to search out

a heaven of peace for his Surat or soul, You perhaps know about the Association of Research an Enlightment at Virginia Beach. The members of this Association met me in Delhi last year. They gave me a book written on a man called Edgar Cayce, who used to give readings for the sick persons and also give some prophecies. How could he make prophecies while he was asleep? When a man goes to deep sleep his attention of the soul or Surat dissociates itself from the physical environment. Is it not so? Now every human being is gifted by nature with the power of the third eye. But there is a path for those who want to penetrate through this third eye and gain the invisible knowledge of things and happenings Those who want to attain this have to adopt certain methods to become oblivious of the physical surroundings and the physical knowledge so that they may become aware of that knowledge which comes through the third eye. The religion of saints prescribes a method which consists of Simaran or meditation on some holy name (which people call Mantram). This method helps the concentration of the mind on the centre of the forehead. This concentration is possible by the repetition of the name or the word given to the aspirant by his Spiritual Guide or Spiritual Father When a person thus engages himself in Simarana, he rises above his physical senses This third eye which is in the middle of the forehead is called Trikuti in our language. So my daughter!

you and many other aspirants are bestowed with the power of the third eye which has been discovered in animals and birds. But people are ignorant of this fact. This is the method and the procedure to develop the inner vision which transcends the physical realm. One has to follow the proper procedure with the guidance of the Master.

I have stated that the spiritual development and the enjoyment of the bliss by Surat or self is possible only through Simaran. I have also told you that the name or the word for Simaran must be given by the master. This name or word has special signsficance for the disciple. Unless this meaning or significance is known to the disciple the mere repetition of it cannot bring about spiritual development. I will clarify it with an example. You know that if somebody eats or drinks something sour in your presence, you might begin to have the flow of saliva at the mere sight of it The reason is that the sour object carries meaning for you. Sometimes even the mention of lemon or a sour object might cause the flow of saliva, because the word carries a particular meaning to us. Similarly the spiritual master gives a name which carries meaning. The spiritual master must have the practical experience of that name and effect of that name himself.

This is necessary because when the disciple looks at the expression of his master, who is enjoying the

spiaitual bliss, he also feels the similar bliss by uttering the name. Let me clarify this again with the same example. When we look at the exppression and the behaviour of a man who is tasting lemon, we spontaneously recall to our mind the effect to tasting lemon and begin to experience the flow of salva. Similary the association with the spiritual master just like the association with the sour objects is necessary for experiencing the effect of Simarana, I have now reached a state which is that of infinite peace. I have passed through all the lower stages of cosmic rays, mental regions and even spiritual regions. Due to this stage the people who come into contact with me automatically get spiritual benefit. Just as in human relations you can infer whether another person is pleased or displeased just by observing his behaviour, similarly one can infer and be benefitted spiritually by just being in the presence of the master. Thats is why the people who are intouch with a true saint are benefitted. This is the law of nature. You have come from America to India not accidentally, but due to your past Karmas or His Will, nature's will, Master's will. God's will. Master may suggest any name for Simaran, what you have to do is to meditate into your self through Simaran regularly. Sometimes one rises above Simaran and sometimes even the longing of man is enough for spiritual experience. This is the stage where a person reaches a higher level. But Simaran helps a person to rise

above the physical and mental levels and to be free from the influence of wordly troubles and sorrows A man without Simaran is shocked by untoward happenings Everyone experiences problems and difficulties of life. But meditation which conveys the desire of the solution to problems to the third eye, brings about the resolution of the problems,

Let me give you another example. There is a person who is a School master He came to me and told that though he was a school teacher, he used to treat patients to supplement his income. But he was not a registered medical practician. He told me that about a year ago a very well-to-do man of the town came to him for treatment. He prescribed a particular medicine to him, but that medicine had an adverse effect, with the result that the patient was almost on the death bed. Now the school master was purturbed and became extremely nervous. He had not known me before but he had full faith in God. He prayed earnestly. He said that a light appeared within him and he saw my image in that light. He did not know whose image it was. That image told him that he should give another medicine to the patient to save his life. He said that he followed the advice and went to the patient at midnight to administer the suggested medicine. The patient was saved Afterwards he met somebody who was in my contact and who gave him the books containing my lectures. When he saw my picture he

immediately recognized it, because of his experience of the appearance of its image.

Oh daughter! I have come in the physical form of Faqir in the present age to remove the ignorance of the people, who do not know the truth. All these happenings are governed by a natural law. Why did my image appear to the school master? I can swear upon my honour that I had no knowledge of it. I am the first saint in India and perhaps in the world who has disclosed this well guarded secret. Other saints have not disclosed this secret on account of two reasons. One reason has been that they wanted the people to have firm faith, the second reason has been that acquiring name and fame. But I do not believe in the acquisition of wealth or in name and fame. Four years ago I went to a village where I had been earlier and where many people almost the whole village considered me to be their master. A man came to me and placed a baby in my lap saying, "Baba ji this is your gift." I was surprised to hear this. But he related the story to me. He told me that his wife has no issue for eighteen years after their marriage. His parents were my followers and had my picture in their home. But they were keen that their son and daughter-inlaw must have a child. They decided that their son should be remarried. But his wife who was grieved went to the room where my picture was placed and wept bitterly before it praying

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

that she should be blessed with a son. According to her report a light appeared in that dark room and my image handed over to her a child of light and said, "Do not weep, you will have a son." She was blessed with a son after ten and a half months, I can assure you that I had no knowledge of these happenings at all. I never knew even the name of that lady. Dr. Sharma's sister Krishna also tells many similar stories. All this is due to one's own mind. If you concentrate within yourseif and entertain sincere prayer and pure thoughts, you are benefitted. In Christianity prayer is the fundamental law. In prayers the soul or Surat activated the third eye, which sets in motion the cosmic rays and one comes to know the future happenings. It is so because the soul is enlightened. On account of this spiritual law of radiation you have been dragged here from America. Thought is indestructible just as matter is indestructible. Matter or material energy simply changes its form. Thought is subtle matter and follows the same law. It changes the forms, but remains indestructible. Science is gradually trying to understand this truth. You might have heard about Newton theory of motion. According to it the motion starting from one place comes back to that place after a circuit. Therefore your thought, your desires, your words generate motion, which goes up in the atmosphere. It remains there for sometime and returns to the person and place from where it had started. This law explains the

statement, "As you sow so shall you reap." Hence whatever you think this, you actually experience. The fundamental law of light is that one should not entertain negative thoughts for others. A person who is sincere and whose thoughts are pure, attains great mental powers. The thoughts of such a person remain in the attmosphere and any desirous soul needing help is influenced by those thoughts. When a person prays sincerely, these pure thoughts come to his help directly or through other persons.

Your coming here has the same background. You have come to me because I had a desire that my message of truth should be known to the world. These ideas of mine were present in the atmosphere and they influenced your mind, because you were fit to receiee them. These ideas have perhaps moved you. I am tellng you this, because I want that the people should know the truth through their own personal experience. They should not be misled and made crazy. They should not act like mad men. A mad person enjoys his madness but he ruins his life. There is no need of crying my daughter ! even though crying and weeping are essential in the beginning. It is so because in the beginning one's mind is not st ong and capable of expressing the feelings. One acts like a child who cannot express his feelings of hunger to his mother except through crying. When he cries

without the enjoyment of the mind through the third eye.

My child! this is the way I explain the truth every day. The purpose of the religion of the saints is to suggest the remedy for the suffering of humanity. This religion leads the soul of man beyond physical and mental rogions so that it may not return to lower stage. This is true spiritualism. But in order to attain this stage it is necessary to go through sufficient experience of sractical life. The life teaches man through suffering. Those who are blessed with children are also not satisfied and show sufferings. Those rich persons who are issueless also have worries and sufferings. The perfect peace is attainable only when man goes back to his origin. The origin of man is that invisible energy which exists in the genesis of the parents. Unless a person goes back to that origin which is manifested in light and sound and which is beyond the self and beyond the world, one does not reach one's original home. Even in the Bible this sound is referred to as Word in the gospel of John. It is stated there that in the beginning Word existed with God and Word was God. In Hinduism the sages have mentioned that this Sound is Cosmic Word, which they call Shabda Brahman. Thus it is a truth that light and sound enter into the the spermatozoa of the father which causes the origin of the child. Sometimes it happens that even without the spermatozoa from the father a woman conceives a child. This is quite possible. Birth of Jesus Christ is one example to prove this. There are many similar examples in the history of Hindu culture. The purpose of stating all this is that all matter including the spermatozoa is produced by the

electrons of light and sound. So our origin is light and also something else which is beyond light and sound.

I know that it is very difficult for you to understand what I have said. In the beginning even I had the same difficulty. I had a strong desire to go beyond my mental self. But I was so much engrossed and involved in the experiences at the mental regions that I was at a loss to understand truth as a beginner. But luckily I had my Guru, my spiritual father. He had come in this world to reveal this truth. He entrusted me this duty, so that I may be able to attain the goal of life. When He made me a Guru to guide others, I did not know the purpose of this duty. But it was through this experience as the guide to others that I was awakened and I came to know the final truth of the perfection of man, which is within himself. Oh daughter! people like you are my real Guru.

Let me clarify this again with an illustration from my vast spiritual experience as the Guru appointed by my spiritual father. This example confirms that the so called miracles happen due to the law of radiation. This is the story of a man, who was upset due to the illness of his wife. She had been ailing for five or six years. He had been crying and crying before my picture According to his report my image appeared to him and told him that he should give such and such medicine to his wife and that she would be cured with it. When his wife was cured with that medicine, he came to me and related the story. Now Oh! my daughter! I am talking to you as a saint and since I am true, I want that people should understand the truth. I do not know how my image appeared to him. I do not want that spiritualism should be measured with money. I know that many people in American make spiritualism a

profession. I went the American people to know the truth and to resist the misuse of spiritualism. This has been my desire and I think that your contact with me has this purpose. My message is that no one should be duped by false teachers of spiritualism. I am thankful to you and all others, who would help me in conveying this truth to the whole mankind, "Man, you are the author of your thought and you are perfect." Dr. I, C. Sharma, I am telling you that I want to convey whatever I have gained to my own experience. However I cannot boast that my experience is hundred percent correct. I think no one has been able to know the whole truth at one time. Kabir had one vision of this truth. Jesus Christ had another and Mohammed had still another partial view of the same truth. Even my Guru had a limited view of this truth. But there is no doubt that this truth has been revealed to a great extent through the master In the next lecture I will tell you why man has appeared on this earth. I will also tell you about the creation of man. This morning I have only explained to you that if a person does not want to come back, he must penetrate first through the third eye, then enjoy the bliss at mental level and finally go beyond the mental region through the Samadhi. One should not be hasty, but slow and steady on this path.

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ॥
तेरी शरणागत हुआ फ़िर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास ॥
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
16-1-83 को होगा।

शुद्धि

मौज-ए-फ़कीर

पन्ना 70 पर ऊपर की एक लाईन ऐसे पढ़ें :—

सन्त की गति गोई, दादू जाने ना कोई ॥

Regd. No. 2626574 JANUARY 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hnmanth Rao
H. No. 10-3-194/8 Humayun
Nagar Hydrabad A. P.
Pin—500028

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)